राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित

8

वर्ष 10 अकं :325 रांची (झारखंड),बुधवार , 30 अक्टूबर 2024 पेज - 08 मूल्य: 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

प्रधानमंत्री ने धनतेरस पर रोजगार मेले में 51 हजार युवाओं को सौंपे नियुक्ति पत्र

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को धनतेरस के मौके पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रोजगार मेले में 51 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे। प्रधानमंत्री ने सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि देश के युवाओं को ज्यादा से ज्यादा रोजगार मिले, ये हमारा कमिटमेंट है। प्रधानमंत्री ने इस मौके पर देशवासियों को धनतेरस और दीपावली की शुभकामनाएं दीं। इस वर्ष की दीपावली को विशेष बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि 500 वर्षों के बाद भगवान श्रीराम के अयोध्या में भव्य मंदिर में विराजमान होने के बाद यह पहली दीपावली है। इस दीपावली का इंतजार कई पीढ़ियों ने किया है, जबकि कई लोगों ने इसके

लिए अपने प्राणों की आहुति दी है या विपत्तियों का सामना किया है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि वर्तमान पीढ़ी ऐसे उत्सवों को देखने और उनका हिस्सा बनने के लिए बेहद भाग्यशाली है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उत्सव के माहौल में 51,000 युवाओं को सरकारी नौकरियों के लिए भर्ती पत्र सौंपे जा रहे हैं। उन्होंने नए भर्ती हुए लोगों को बधाई दी और उन्हें अपनी शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री ने कहा कि लाखों युवाओं को स्थायी सरकारी नौकरी देने का सिलसिला जारी है। उन्होंने कहा कि भाजपा और एनडीए सहयोगियों द्वारा शासित राज्यों में भी लाखों युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए हैं। मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि हरियाणा में 26,000 युवाओं को नई सरकार द्वारा नौकरी मिलने से उत्सव का माहौल है। हरियाणा में भाजपा की सरकार की पहचान बिना किसी खर्च या सिफारिश के नौकरी देने की है। प्रधानमंत्री ने सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई कि देश के युवाओं को अधिकतम रोजगार मिलना चाहिए। सरकार की नीतियों और निर्णयों का रोजगार सृजन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने देशभर में तमाम विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि इससे न केवल नागरिकों को लाभ हो रहा है बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा हो रहे हैं। कल गुजरात के वडोदरा की अपनी यात्रा को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने रक्षा क्षेत्र के लिए एक विमान निर्माण सुविधा का उद्घाटन करने का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इससे हजारों नागरिकों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा जबकि एमएसएमई उद्योगों को स्पेयर पार्ट्स और अन्य उपकरणों के निर्माण से बहुत लाभ होगा, जिससे आपूर्ति श्रृंखलाओं का एक विशाल नेटवर्क तैयार होगा।

वायु प्रदूषण में मामूली गिरावट, 275 दर्ज किया गया औसत एक्यूआई

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में मंगलवार को गिरावट देखने को मिली है। सुबह 6.15 बजे तक यहां औसत एक्यूआई 275 दर्ज किया गया। सर्दियों के शुरू होते ही दिल्ली में वायु प्रदूषण बढ़ने की समस्या देखने को मिलती है। इससे लोगों को सांस में परेशानी होती है, जिसमें खासतौर पर बच्चे और बूढ़े शामिल हैं। पिछले कुछ दिनों से लगातार बढ़ रहे एक्यूआई के बाद मंगलवार को इसमें मामूली गिरावट दर्ज की गई है। केंद्रीय प्रदूषण एवं सीपीसीबी के अनुसार राजधानी दिल्ली में मंगलवार सुबह 6:15 बजे तक औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 275 दर्ज किया, जो पिछली कई दिनों की तुलना में कम है, लेकिन अभी भी खराब श्रेणी में बना हुआ है। दिल्ली एनसीआर के शहर फरीदाबाद में 180, गुरुग्राम में 232, गाजियाबाद में 227, ग्रेटर नोएडा में 219 और नोएडा में 226 एक्यूआई दर्ज किया गया है। वहीं, इसके अलावा राजधानी दिल्ली के 11 इलाकों में एक्यूआई लेवल 300 से ऊपर 400 के बीच में बना हुआ है। अलीपुर में 306, आनंद विहार में 314, आया नगर में 313, बवाना में 324, जहांगीरपुरी में 306, मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में 305 मुंडका में 338, नरेला में 313, सोनिया विहार में 313, विवेक विहार में 310, वजीरपुर में 309 एक्यूआई रहा। अगर राष्ट्रीय राजधानी में एक दिन पहले के वायु गुणवत्ता पर ध्यान दें तो ये सोमवार को सुबह 7.30 बजे औसत एक्यूआई 328 दर्ज किया गया था। दिल्ली के अधिकतर इलाकों में एक्यूआई लेवल 300 से 400 के बीच दर्ज किया गया था। इसमें अलीपुर में 335, आनंद विहार

में 357, अशोक विहार में 361, आया नगर में 336, बवाना में 367, बुराड़ी क्रॉसिंग में 362, डॉ करणी सिंह शूटिंग रेंज में 334, द्वारका सेक्टर 8 में 331, आईजीआई एयरपोर्ट में 316, आईटीओ में 326, जहांगीरपुरी में 366, लोधी रोड में 307 और मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में 348 एक्यूआई दर्ज किया गया था।

'रन फॉर यूनिटी' अब विकसित भारत का संकल्प भी बन गई है : अमित शाह

एजेंसी

नई दिल्ली। सरदार पटेल के जन्मदिन सप्ताह में दिल्ली के मेजर ध्यानचंद स्टेडियम से 'रन फॉर यूनिटी' को हरी झंडी दिखाई गई। इस कार्यक्रम में हजारों लोगों ने भाग लिया। देश के गृह मंत्री अमित शाह ने देशवासियों को बधाई दी। उन्होंने इस प्रोग्राम को संबोधित करते हुए कहा, आज हम सब 'रन फॉर यूनिटी' में एकत्र हुए हैं। ये एकता दौड़ सिर्फ़ भारत की एकता का संकल्प नहीं है। अब एकता दौड़ विकसित भारत का संकल्प भी बन गई है। क्योंकि 2047 में जब भारत अपनी आज़ादी की शताब्दी मनाएगा, तो हमारे देश के प्रधानमंत्री ने इस देश के नागरिकों के सामने एक पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है और प्रधानमंत्री ने एक ऐसा भारत बनाने का संकल्प लिया है जो हर

क्षेत्र में पूरी दुनिया में प्रथम होगा। आज जब मैं आप सबके सामने उपस्थित हूं, तो भारत एक समृद्ध, विकासशील, आगे बढ़ता हुआ, सशक्त राष्ट्र के रूप में दुनिया के सामने खड़ा है। उन्होंने आगे कहा, जब हम अपने इतिहास पर नज़र डालते हैं, तो आजादी के बाद 552 राजे-रजवाड़ों को एक साथ लाने की एक बहुत बड़ी समस्या अचानक देश के सामने खड़ी हो गई। उस समय ये सरदार साहब ही थे, जिन्होंने अपनी दृढ़ निर्णय शक्ति, दृढ़ इच्छा शक्ति और तेज गति से इन सबको एक साथ लाकर आज के भारतीय संघ का नक्शा हम सबके सामने लाया। ये सरदार पटेल ही थे जिनकी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण आज देश एकजुट है। दुनिया के सामने मजबूती से खड़ा है। जब स्वतंत्रता दिवस मनाया गया तो सरदार पटेल ने अपनी कुशलता और दृढ़ संकल्प का परिचय देते हुए पूरे जोश के साथ इन सभी रियासतों को भारत के साथ जोड़ा, चाहे वो लक्षद्वीप हो, जूनागढ़ हो या हैदराबाद हो। आज भारत दुनिया के सामने प्रथम बनने के मार्ग पर मजबूती से खड़ा है। इसकी नींव रखने का काम हमारे सरदार पटेल साहब ने किया था।

शराब घोटाले में झारखंड के सीनियर आईएएस विनय चौबे सहित कई अफसरों और लोगों के ठिकानों पर ईडी की रेड

एजेंसी

रांची । शराब घोटाले के जरिए मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में ईडी ने झारखंड के सीनियर आईएएस विनय चौबे और एक्साइज डिपार्टमेंट के संयुक्त सचिव गजेंद्र सिंह के आवासों और उनके करीबियों के ठिकानों पर मंगलवार सुबह से छापेमारी शुरू की है। ईडी की टीमें दोनों अफसरों के चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के यहां भी जांच और तलाशी के लिए पहुंची हैं।

शराब घोटाले का यह मामला छत्तीसगढ़ और झारखंड दोनों राज्यों से जुड़ा है। इसे लेकर छत्तीसगढ़ के एंटी करप्शन ब्यूरो और आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने पिछले महीने सात लोगों के खिलाफ पिछले महीने एफआईआर दर्ज की थी। इसमें झारखंड के एक्साइज डिपार्टमेंट के तत्कालीन सचिव विनय चौबे और संयुक्त सचिव गजेंद्र सिंह सहित सात

लोगों को आरोपी बनाया गया था। एफआईआर में कहा गया है इन लोगों ने मिलकर कथित तौर पर झारखंड की शराब नीति में हेरफेर की और सरकारी खजाने को नुकसान पहुंचाया। एसीबी और ईओडब्ल्यू की इसी एफआईआर के आधार पर केंद्रीय जांच एजेंसी ईडी ने जांच शुरू की है। इस मामले में आरोपी बनाए गए अन्य लोगों में छत्तीसगढ़ के पूर्व आईएएस अधिकारी अनिल टुटेजा, व्यवसायी अनवर ढेबर, छत्तीसगढ़ राज्य विपणन निगम के पूर्व प्रबंध निदेशक अरुणपति त्रिपाठी, आईएएस अधिकारी और छत्तीसगढ़ के पूर्व आबकारी आयुक्त निरंजन दास, अरविंद सिंह और नोएडा के व्यवसायी विधु गुप्ता के नाम शामिल हैं इस मामले की एफआईआर रांची के अरगोड़ा निवासी विकास सिंह की शिकायत पर दर्ज कराई गई थी। इसमें दावा किया गया है कि आरोपियों के एक सिंडिकेट ने झारखंड के अधिकारियों के साथ मिलकर राज्य की आबकारी नीति में बदलाव किया, ताकि शराब आपूर्ति के ठेके सिंडिकेट के सदस्यों को मिल सकें। आरोप है कि इस सिंडिकेट ने बिना हिसाब-किताब के घरेलू शराब को फर्जी होलोग्राम के साथ बेचा और कुछ विशेष कंपनियों को विदेशी शराब अवैध रूप से प्रदान कर करोड़ों रुपये की अवैध कमाई की। एफआईआर के अनुसार, झारखंड के आईएएस विनय चौबे और और संयुक्त आबकारी आयुक्त गजेंद्र सिंह ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों के समर्थन से टेंडर के नियमों में संशोधन किया और ऐसे टर्नओवर की शर्त जोड़ी गई, जिससे यह ठेके सिंडिकेट को ही मिल सकें। इस पॉलिसी के कारण झारखंड सरकार के खजाने को 2022 से 2023 के बीच भारी वित्तीय नुकसान पहुंचाने की साजिश की गई।

शिंदे समूह के विधायक श्रीनिवास बनगा लापता, तलाश जारी

एजेंसी

मुंबई। पालघर के शिवसेना शिंदे गरुप के विधायक श्रीनिवास वनगा पार्टी की ओर से उम्मीदवारी न मिलने नाराज हैं और सोमवार शाम से लापता हैं। बनगा के दोनों मोबाइल फोन बंद हैं, पुलिस बनगा की तलाश कर रही है। श्रीनिवास बनगा की पत्नी सूमन बनगा ने बताया कि शिंदे समूह की ओर से उनका टिकट काटकर पूर्व सांसद राजेंद्र गावित को दे दिया गया। इससे श्रीनिवास बनगा काफी नाराज हो गए थे। सोमवार शाम को बनगा घर से बिना मोबाइल फोन लिए पैदल निकले थे, मंगलवार सुबह तक घर नहीं लौटे। पुलिस के साथ पूरा परिवार उनकी तलाश कर रहा है। उल्लेखनीय है कि शिवसेना के विभाजन के समय श्रीनिवास बनगा सूरत, गुवाहाटी और गोवा में एकनाथ शिंदे के साथ थे। एकनाथ शिंदे के मुख्यमंत्री बनने से अब तक बनगा हमेशा शिंदे के साथ रहे हैं। लेकिन इसके बाद भी टिकट कटने पर श्रीनिवास वनगा फूट-फूटकर रोने लगे थे। उस समय श्रीनिवास बनगा ने कहा कि मेरे मन में आत्महत्या के विचार आने लगे हैं। इसके कुछ देर बाद श्रीनिवास वनगा घर से बिना बताए अकेले पैदल घर से निकले थे। श्रीनिवास बनगा की तलाश जारी है।

सलमान खान और जीशान सिद्दीकी को धमकी देने वाला गिरफ्तार, नोएडा से धरा गया गुरफान खान

एजेंसी

मुंबई। बॉलीवुड स्टार सलमान खान और विधायक जीशान सिद्दीकी को धमकी देने वाले आरोपी गुरफान खान को उत्तर प्रदेश पुलिस ने नोएडा से गिरफ्तार कर लिया है। गुरफान खान पर सलमान खान को जान से मारने की धमकी देने का आरोप है। पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए उसे दबोचने में सफलता पाई है। सूत्रों के अनुसार, गुरफान ने सलमान खान और जीशान सिद्दीकी को धमकी भरे संदेश भेजे थे, जिसके बाद मामला संज्ञान में

आया। सलमान खान को कई बार जान से मारने की धमकियां मिल चुकी हैं, और इस बार भी धमकी के बाद पुलिस अलर्ट पर थी। मुंबई पुलिस ने भी मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू की थी, जिसके बाद यह गिरफ्तारी हुई है। पुलिस का कहना है कि गुरफान से पूछताछ की जा रही है, ताकि धमकी के पीछे की मंशा और इसमें शामिल अन्य लोगों का पता लगाया जा सके। आरोपी का फोन जब्त कर लिया गया है, जिसमें से महत्वपूर्ण सबूत मिलने की उम्मीद है। सलमान खान और जीशान सिद्दीकी को मिली धमकियों से जुड़े किसी बड़े नेटवर्क के खुलासे की भी आशंका जताई जा रही है। पुलिस के मुताबिक, आरोपी गुरफान खान की गिरफ्तारी रविवार को हुई है. नोएडा क्राइम ब्रांच ने आरोपी को अरेस्ट किया है. शुक्रवार को जीशान सिद्दीकी के बांद्रा ईस्ट स्थित जनसंपर्क कार्यालय को धमकी भरा फोन आया था।

केरल के मंदिर में आतिशबाजी के दौरान पटाखों में विस्फोट, 154 लोग घायल

एजेंसी

कासरगोड। केरल के कासरगोड जिले में एक मंदिर में पटाखों के हादसे में कम से कम 154 लोग घायल हो गए हैं, जिनमें से आठ की हालत गंभीर है। यह घटना अंजूतामबलम वीररकवु मंदिर में सोमवार आधी रात के बाद हुई, जब 1500 से अधिक लोग पारंपरिक थेय्यम महोत्सव में शामिल होने के लिए मंदिर में एकत्र थे।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हादसा तब हुआ जब पटाखों से उठी चिंगारी मंदिर के एक कमरे में रखे अन्य पटाखों पर गिर गई, जिससे विस्फोट हो गया।

अधिकारियों के अनुसार, एक व्यक्ति की हालत नाजुक है और आठ गंभीर रूप से घायल हैं। कुल मिलाकर 154 लोग इस विस्फोट और उसके बाद भगदड़ में घायल हुए हैं। इनमें से 97 लोग विभिन्न अस्पतालों में भर्ती हैं।बताया गया है कि मंदिर प्रबंधन ने त्योहार के लिए लगभग 25,000 रुपये के हल्के पटाखे रखे थे, जो मंगलवार रात को समाप्त होना था। इस घटना में घायल एक युवती ने बताया कि चिंगारी पटाखों के कमरे में गिरते ही सब लोग भागने लगे।

एनसीपी ने चौथी लिस्ट की जारी, मोर्शी से देवेंद्र भुयार और भोर से शंकर हिरामण मांडेकर को उतारा

एजेंसी

मुंबई । महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने अपने उम्मीदवारों की चौथी लिस्ट जारी कर दी है। जिसमें दो प्रत्याशियों के नाम शामिल हैं। एनसीपी ने मोर्शी विधानसभा सीट से देवेंद्र महादेवराव भुयार और भोर विधानसभा सीट से शंकर हिरामण मांडेकर को मैदान में उतारा है। एनसीपी इससे पहले प्रत्याशियों की तीन सूची जारी कर चुकी है। इससे पहले एनसीपी ने कुल 49 उम्मीदवार मैदान में उतारे थे, चौथी लिस्ट के साथ ही पार्टी अब तक 51 प्रत्याशियों की घोषणा कर चुकी है। दरअसल, महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद से यहां पर राजनीतिक घटनाक्रम तेज हो गया है। सत्ता पक्ष के गठबंधन महायुति और विपक्षी गठबंधन महाविकास अघाड़ी में शामिल दलों द्वारा हर दिन किसी न किसी प्रत्याशी की घोषणा की जा रही है। महायुति में शामिल भाजपा ने अब तक 146 प्रत्याशियों को मैदान में उतारा है। इससे पहले शिवसेना ने सोमवार को 15 उम्मीदवारों की अपनी तीसरी सूची जारी की थी। शिवसेना तीनों सूची मिलाकर अब तक 78 उम्मीदवारों को मैदान में उतार चुकी है। अधिकांश मौजूदा विधायकों (40) को दोबारा मौका दिया गया है। सोमवार तक 288 विधानसभा

क्षेत्रों के लिए 3,259 उम्मीदवारों ने लगभग 4,426 नामांकन पत्र दाखिल किए थे।महाराष्ट्र में एक ही चरण में चुनाव होना है। 20 नवंबर को मतदान का प्रयोग करेंगे, वहीं नतीजों की घोषणा 23 नवंबर को होगी।

बसपा प्रमुख मायावती ने भाजपा और कांग्रेस पर बोला हमला

एजेंसी

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने मंगलवार को भाजपा और कांग्रेस पार्टी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने दोनों पार्टियों को एक ही थाली के चट्टे-बट्टे कहा है। मंगलवार को एक्स पर पोस्ट करते हुए मायावती ने कहा कि देश के करोड़ों शोषित व उपेक्षित दलितों के आरक्षण विरोधी तथा उनकी आपसी एकता की दुश्मन जातिवादी पार्टियों द्वारा आरक्षण में कोटे के बंटवारे के प्रति सक्रियता से यह साबित है कि भाजपा व कांग्रेस एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं। उनसे समाज व संविधान को खतरा घटा नहीं बल्कि बढ़ा है। उन्होंने कहा कि हरियाणा की भाजपा सरकार के बाद अब तेलंगाना व कर्नाटक की कांग्रेस सरकार की दलितों को बांटने के लिए उनके

आरक्षण के भीतर आरक्षण की नई व्यवस्था को आपाधापी में लागू करने का फैसला वास्तव में आरक्षण को निष्क्रिय व निष्प्रभावी बनाने के षड्यंत्र का नया प्रयास है।

प्रधानमंत्री ने आदिवासी नेता कार्तिक उरांव को उनकी जन्म शताब्दी पर श्रद्धांजलि दी

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज आदिवासी नेता कार्तिक उरांव को उनकी जन्म शताब्दी पर श्रद्धांजलि दी। मोदी ने उरांव को महान नेता बताया जिन्होंने अपना पूरा जीवन आदिवासी समुदाय के अधिकारों और स्वाभिमान के लिए समर्पित कर दिया और आदिवासी संस्कृति और पहचान की रक्षा के लिए आदिवासी समाज के मुखर प्रवक्ता रहे।

प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, आदिवासी समुदाय के अधिकार और आत्मसम्मान के लिए जीवनपर्यंत समर्पित रहे देश के महान नेता कार्तिक उरांव को उनकी जन्म-शताब्दी पर आदरपूर्ण श्रद्धांजलि। वे जनजातीय समाज के एक मुखर प्रवक्ता थे, जो आदिवासी संस्कृति और अस्मिता की रक्षा के लिए निरंतर संघर्षरत रहे। वंचितों के कल्याण के लिए उनका अतुलनीय योगदान देशवासियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा। उल्लेखनीय है कि

कार्तिक उरांव का जन्म 29 अक्टूबर 1924 को तत्कालीन बिहार के गुमला जिले के करौंदा लिटाटोली गांव में हुआ था। कांग्रेस नेता कार्तिक उरांव तीन बार लोकसभा और एक बार विधानसभा के सदस्य रहे। 8 दिसंबर 1981 को उनका निधन हो गया।

दुनिया के 100 देशों को रक्षा उपकरण बेच रहा है भारत, रक्षा निर्यात 77 फीसदी बढ़ा

नई दिल्ली। रक्षा निर्यात से जुड़े आंकड़े बताते हैं कि भारत को रक्षा निर्यात के क्षेत्र में जबरदस्त कामयाबी मिली है। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, साल की दूसरी तिमाही में रक्षा उपकरणों एवं रक्षा क्षेत्र से जुड़ी वस्तुओं का निर्यात 77 प्रतिशत बढ़ गया है। इतना ही नहीं एक बड़ी उपलब्धि यह भी है कि हम 100 से अधिक देशों को रक्षा उपकरण निर्यात कर रहे हैं। मंत्रालय का कहना है कि रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भर भारत' के प्रति देश की प्रतिबद्धता हमें रक्षा उत्पादन में वैश्विक नेतृत्व की ओर ले जा रही है। आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2024- 25 की दूसरी तिमाही में देश का रक्षा निर्यात 11,233 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। पिछले साल की इसी अवधि में भारत का रक्षा निर्यात केवल 6,342 करोड़ रुपये था। इस प्रकार इसमें 77 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि दर्ज की गई है।

पीएम मोदी की नीतियों से आम आदमी को फायदा नहीं : प्रियंका गांधी

एजेंसी

वायनाड । कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने मंगलवार को वायनाड के एंगपुझा में एक जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने वायनाड के लोगों की सराहना करते हुए कहा कि यहां के लोगों का इतिहास बहुत समृद्ध है, आपने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। प्रियंका गांधी ने केंद्र सरकार पर

निशाना साधा। उन्होंने कहा कि पिछले दस सालों में हमने लोगों के प्रति पूरी तरह से उपेक्षा देखी है। मोदी की नीतियों से सिर्फ बड़े कारोबारी मित्रों को फायदा होता है, आम नागरिकों को नहीं। किसानों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है, जिन्हें न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) देने का वादा किया गया था, लेकिन उन्हें कभी नहीं मिला। देश भर में आदिवासी लोगों पर हमले हो रहे हैं, उनकी जमीनें बड़े व्यापारियों को सौंप दी जा रही हैं। बेरोजगारी चरम पर है और वादों के बावजूद मेडिकल कॉलेज का कोई नामोनिशान नहीं है। जीएसटी व्यवस्था भी छोटे व्यवसायों को नुकसान पहुंचा रही है। प्रियंका ने रैली को संबोधित करते हुए कहा, मैं वायनाड के इतिहास को अच्छी तरह जानती हूं। वायनाड के लोग हमेशा सही के लिए खड़े रहे हैं।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश की एक 'मीटिंग' और कई 'निशाने'!

एजेंसी

पटना । बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के सभी घटक दलों के नेताओं को एक साथ बैठाकर कई निशाने साध लिए। इसमें कोई शक नहीं है कि पिछले कई सालों से बिहार में सरकार किसी भी गठबंधन की रही हो लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही रहे हैं। दरअसल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को मुख्यमंत्री आवास में एनडीए की एक बैठक बुलाई थी। इस बैठक में एनडीए में शामिल घटक दलों के प्रमुख नेता शामिल हुए थे। इस बैठक में हालांकि पूर्व केंद्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस की पार्टी को आमंत्रित नहीं किया गया था।

इस बैठक में नीतीश कुमार ने अगले साल होने वाला विधानसभा चुनाव उनके नेतृत्व में लड़ा जाएगा, इसके लिए उपस्थित सभी दलों की सहमति प्राप्त की। वैसे, इससे पहले भी भाजपा सहित अन्य दलों के नेता इससे संबंधित बयान देते रहते थे, लेकिन बैठक में सभी ने एक स्वर में इसकी पुष्टि कर दी। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल कहते भी हैं कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही एनडीए 2025 का विधानसभा चुनाव लड़ेगी।

उन्होंने यह भी कहा कि हम बेहतर समन्वय के साथ चुनाव मैदान में उतरेंगे, इसमें किसी को गलतफहमी नहीं पालनी चाहिए। इस बैठक के जरिये जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार ने विरोधियों को भी एनडीए के एकजुट होने की ताकत दिखाई। बैठक में एकजुटता पर सबसे अधिक जोर रहा और सभी ने एक स्वर में साझा कार्यक्रम चलाने और एनडीए के कार्यकर्ताओं में बेहतर समन्वय बनाने की बात कही। बैठक में एनडीए के नेताओं को बिहार की 243 विधानसभा सीटों में से 220 से 225 सीटों पर जीत का लक्ष्य देते हुए नारा दिया गया, '2025 में 225, फिर से नीतीश'

संक्षिप्त समाचार

झामुमो में शामिल हुए दर्जनों से अधिक लोग, जिला अध्यक्ष शाहजंहा अंसारी ने सभी का किया स्वागत

मंडरो: मंडरो प्रखंड अंतर्गत अम्बाड़िहा पंचायत के ग्राम अम्बाडीहा में मो ० नईम अंसारी के निजी आवास में झामुमो जिला अध्यक्ष शाहजहाँ अंसारी एवं मड़रो प्रखंड के संजोजक मडली के सदस्य मो० सुभानी और मो शरीफ अंसारीके द्वारा एक बैठक आयोजित की गई ।इसी बीच में मो जब्बार अंसारी के नेतृत्व में 200 दो सौ पुरुष एवं महिलाओं के साथ झामुमो पार्टी के बैठक में शामिल हुए।झामुमो के जिला अध्यक्ष शाहजहाँ अंसानी के द्वारा सभी झामुमो पार्टी के पट्टा पहनाकर पार्टी शामिल किया गया। जैसे बड़कू मुर्मू प्रेम सोरेन भगवान हाँसदा विनय हाँस्दा विषु बास्की मो मंजर अंसारी मेरी मुरमू अंजली हाँसदा मय मुरमू गुलाव अंसारी जाहिद मो समीद मजी बुल अंसारी फरीद अंसारी समीर जमीरुदीन ललीता बास्की मौलवी हुरमुज अंसारी आदि कार्यकत्ताओं पार्टी में शामिल हुए।

सामान्य प्रेक्षक गौतम सिंह ने मतदान केंद्र का किया निरीक्षण

साहिबगंज: बोरियो (अ0ज0जा0) विधानसभा क्षेत्र के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा प्रतिनियुक्त सामान्य प्रेक्षक गौतम सिंह ने उ0म0वि0 गदाई, मोतीझरना के मतदान केंद्र संख्या 186 एवं 187 का निरीक्षण किया। उनके द्वारा उ0म0वि0 अम्बाडीहा, सकरीगली के मतदान बूथ संख्या 183 का निरीक्षण करते हुए बी0एल0ओ0 अमूल कुमार के साथ एवं स्कूल के प्रधानाध्यापक के साथ मतदान केंद्र संबंधी सुविधाओं पर विचार विमर्श किया गया। इसके पश्चात बोरियो विधानसभा में चल रहे नामांकन प्रक्रिया का अवलोकन हेतु निवार्ची कार्यालय में भ्रमण किया।

जनता दरबार में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने उपायुक्त के समक्ष रखी अपनी समस्या

साहिबगंज:समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय प्रकोष्ठ में जिला निर्वाचन पदाधिकारी -सह- उपायुक्त हेमंत सती ने जनता दरबार के माध्यम से आमजनों की समस्याएं सुनी। जनता दरबार में जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने अपनी समस्याओं से उपायुक्त महोदय को अवगत कराया। उपायुक्त महोदय ने उपस्थित मरियम हांसदा, रजनी देवी, नीलू खातून, गुलबदन खातून, एवं अन्य लोगों से एक-एक कर उनकी समस्याएं सुनी। साथ ही उनके सामाधान को लेकर उन्हें आश्वस्त कराया। संज्ञान में आए हुए शिकायतों की जांच कराते हुए जल्द से जल्द समाधान करने की बात कही।गौरतलब है कि जनता दरबार के दौरान शिकायत के रूप में आए आवेदन विभिन्न विभागों से संबंधित एवं असंबंधित रहे।जनता दरबार में शिकायतकर्ता की समस्याएं को सुनने के पश्चात उपायुक्त महोदय ने संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को उनका समाधान करने को लेकर निर्देशित किया। सभी आवेदनों की भौतिक जांच करते हुए उसका समाधान जल्द से जल्द सभी संबंधित पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए प्रतिपुष्टि उपायुक्त कार्यालय को समर्पित करें।

हिरणपुर कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन प्रत्यासी हेमलाल मुर्मू को जिताने के लिए की बैठक

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ हिरणपुर प्रखंड के मोहनपुर में कांग्रेस प्रखंड कमेटी की बैठक प्रखंड अध्यक्ष मनोवर आलम की अध्यक्षता में की गई बैठक में कार्यकताओं ने एकजुटता दिखाते हुए कहा की हमलोग अपने अपने बूथ में इंडिया गठबंधन प्रत्यासी हेमलाल मुर्मू को अधिक मत मिले इसके लिए कार्य करेंगे प्रखंड अध्यक्ष मनोवर आलम ने कहा की कांग्रेस के सभी कार्यकर्ता जेएमएम के साथ मिलकर काम करना है जो कुछ थोड़ी बहुत त्रुटि रही है उसे साथी दल के साथ मिलकर हमलोग ठीक करेंगे और एक बड़ा जीत के लिए हमलोग काम करेंगे साथ ही पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी निशात आलम जी के लिए भी काम करना है हमलोग का जो क्षेत्र है उसमे हमलोग जहा मदद कर सकते है वहा करेंगे और वोट दिलाएंगे साथ ही कार्यकताओं ने इंडिया गठबंधन प्रत्यास हेमलाल मुर्मू जी से मिलने की इच्छा जाहिर की है जिसपर बात कर जल्द ही मिला जायेगा और एक एक वोट जेएमएम को मिले इसके लिए काम करना होगा बैठक में लिट्टीपाड़ा प्रखंड अध्यक्ष मुर्शीद आलम मुस्ताक मोमिन मुजामिल अंसारी आबिद इस्लाम मन्नाफ मोमिन अलीहुसेन अंसारी सत्तार मोमिन सहित अन्य उपस्थित थे.

मांडर, ऑब्जर्वर ने मांडर में किया मतदान केंद्रों का निरीक्षण

मांडर- विधानसभा चुनाव को लेकर जेनरल ऑब्जर्वर एन गिरी ने मंगलवार को मांडर प्रखंड के करगे व तिगोईअम्बा टोली स्थित मतदान केंद्र संख्या 154, 155, 156 एवं 141,142 व 143 का निरीक्षण किया. इस दौरान उन्होंने यहां मतदान को लेकर उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया और सभी मतदान केंद्रों में बिजली, पानी, शौचालय, रैंप आदि की व्यवस्था को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये. ऑब्जर्वर ने स्थानीय पदाधिकारियों को बुजुर्ग एवं दिव्यांग मतदाताओं को घर से ही मतदान की सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर उचित व्यवस्था करने के अलावा अचार संहिता का सख्ती से अनुपालन कराने की बात भी कही. मौके पर बीडीओ मनोरंजन कुमार, मनान अंसारी, बीएलओ आदि मौजूद थे!

त्यौहारी भीड़ के दौरान पू. सी. रेलवे ने यात्रियों की सुरक्षा और सुखद के लिए पहल की

मालीगांव,

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने इस त्यौहारी सीजन में यात्रियों की सुरक्षा और आराम सुनिश्चित करने के कई पहल किए हैं, ताकि सेवा की गुणवत्ता से कोई समझौता न हो। यात्रियों की भीड़ को देखते हुए, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के क्षेत्राधिकार से आवाजाही हेतु कुल 44 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा हैं, जिनमें 500 से अधिक फेरें शामिल हैं। निर्धारित यात्री ट्रेनों के अलावा ये स्पेशल ट्रेनें दिवाली और छठ पूजा के लिए पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य जैसे देश के पूर्वी और उत्तरी हिस्सों की ओर प्रमुख गंतव्यों को जोड़ने हेतु चलाई जा रही हैं। त्यौहारों के दौरान पू. सी. रेलवे ने अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले सभी प्रमुख स्टेशनों और ट्रेनों में योजनाबद्ध तरीके से सुरक्षा उपाय बढ़ा दिए हैं। सभी प्रमुख और महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों पर भीड़ नियंत्रण के व्यापक प्रबंध किए गए हैं, जहां त्यौहारों को मनाने के लिए विभिन्न स्थानों को जाने हेतु भारी भीड़ पहुंचने की संभावना है। इन स्टेशनों पर भीड़ को व्यवस्थित तरीके से नियंत्रित करने के लिए सभी गतिविधियों की निगरानी हेतु वाणिज्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी को तैनात किया गया हैं। भारी भीड़ के दौरान भगदड़ जैसी स्थिति से बचने के लिए भीड़ को सुचारू रूप से नियंत्रित करने के लिए प्लेटफार्मों, फुट-ओवर ब्रिज और सकुर्लेटिंग क्षेत्रों में रेलवे सुरक्षा बल और राजकीय रेलवे पुलिस को मुस्तैद किया गया है। इसके अतिरिक्त, भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों पर कड़ी नजर रखने और यात्रियों को वास्तविक

समय पर सहायता प्रदान करने के लिए सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष स्थापित किए गए हैं। ट्रेनों के प्रारंभिक स्टेशनों पर सामान्य कोचों में प्रवेश के लिए कतार प्रणाली अपनाई गई है। ट्रेनों/कोचों के बारे में उचित घोषणा समय पर सुनिश्चित की जाती है, ताकि यात्रियों को प्लेटफॉर्म के स्थान के बारे में पता चल सके, जहां से ट्रेनें रवाना होगी। प्रारंभिक और गंतव्य स्टेशनों पर ट्रेनों में आसानी से चढ़ने और उतरने की व्यवस्था की गई है। त्यौहारी सीजन के दौरान ट्रेनों में यात्रा करते समय यात्रियों को जागरूक करने के लिए नियमित आधार पर पू. सी. रेलवे द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। पू. सी. रेलवे ऐसे भीड़-भाड़ वाले सीजन के दौरान सभी यात्रियों के लिए सुरक्षित एवं सुखद यात्रा अनुभव को प्राथमिकता देने के लिए प्रतिबद्ध है। समय-समय पर प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न प्रकार के जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।

महेशपुर विधानसभा भाजपा प्रत्याशी नवनीत हेंब्रम ने भरा नामांकन

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:महेशपुर विधानसभा के प्रत्याशी नवनीत हेंब्रम ने मंगलवार को अनुमंडल कार्यालय परिसर में अपना नामांकन पत्र भरा. नामांकन के बाद उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि जब वे पुलिस सेवा में थे, तब भी उन्होंने जनसेवक के रूप में लोगों की मदद की है. नवनीत ने कहा, ह्लयहां के लोगों का अपार स्नेह मिला है. उन्होंने मुझे कई समस्याओं के समाधान के लिए मैदान में उतारने का काम किया है. शिक्षा और रोजगार जैसी कई समस्याएं हैं, जिनका अब तक कोई समाधान नहीं हो पाया है. लोग आज भी दर-दर की ठोकर खा रहे हैं.ह्व उन्होंने आगे कहा कि वे राजनीति में इसलिए आए हैं क्योंकि जनता सर्वोपरि होती है. यदि जनता का सहयोग मिला, तो वे जनसेवक बनकर आगे भी काम करना जारी रखेंगे.

बेंगवारी में लक्ष्मी पूजा समिति के द्वारा किया जा रहा है झारखंड विधानसभा भवन की आकार जैसा भव्य पंडाल का निर्माण

बेंगवारी में करीब 36 वर्षों से लगातार की जा रही है लक्ष्मी पूजा

संवाददाता: ज्ञान कुमार पास्वान केरेडारी:

केरेडारी प्रखण्ड के बेंगवरी में लक्ष्मी पूजा को लेकर कई दिन पहले से ही महालक्ष्मी पूजा समिति बेंगवरी के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य तैयारी में जुट गए हैं। लक्ष्मी पूजा के शुभ अवसर पर झारखंड विधानसभा भवन के आकार जैसा भव्य पंडाल का निर्माण किया जा रहा है जो आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। विधानसभा भवन आकार का भव्य पंडाल को कारीगरों के द्वारा अंतिम रूप दिया जा रहा है। वहीं महालक्ष्मी पूजा समिति के कोषाध्यक्ष मनोज कुमार साव बताते हैं कि बेंगवारी में लगभग 36 वर्षों से मां लक्ष्मी का पूजा अर्चना की जा रही है एवं बेंगवरी का पंडाल इस वर्ष पूरे बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र में

आकर्षण का केंद्र बना रहेगा। हमारे यहाँ झारखंड विधानसभा भवन के जैसा ही पंडाल का निमार्ण किया जा रहा है जिससे बेंगवरी में ही झारखंड विधानसभा भवन की एक झलक देखने को मिलेगा। बताया कि इस्की तैयारी में पूजा सिमिति के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य अपने मन तन से लग गए है। वहीं सचिव कैलाश साव बताते है कि बेंगवरी में 1988 से माँ लक्ष्मी की पूजा अर्चना होती आ रही है। मौके पर पूजा समिति के अध्यक्ष सुरेश राणा, सचिव कैलाश साव, कोषाध्यक्ष मनोज कुमार साव समेत पूजा समिति के सभी सदस्यगण उपस्थित थे।

दिल्ली पब्लिक स्कूल पाकुड़ में दिवाली के पूर्व संध्या पर सजा राम दरबार

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:दिल्ली पब्लिक स्कूल, पाकुड़ में दिवाली की पूर्व संध्या पर राम दरबार की झाँकी प्रस्तुत की गई। विद्यालय के छात्रों ने इस अवसर पर राम दरबार की झाँकी प्रस्तुत करने में सक्रिय रूप से भाग लिया और राम के चरित्र से संबंधित कविता पाठ के साथ नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत किया। इस नाटिका का मूल उदेश्य था राम के जीवन के त्याग और उनके आदर्शो से बच्चों को परिचित कराना। ताकि बच्चों में नैतिकता को बढ़ावा मिले।

इसके साथी विद्यालय में मोमबत्ती और दिया सजाओ तथा अंतर सदनीय रंगोली प्रतियोगिता भी हुई। रंगोली के माध्यम से बच्चों ने आगामी मतददान के लिए सन्देश, महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण के लिए मतदान जरुरी , अनेकता में एकता, बेटी पढ़ाओ बेटी

बचाओ, एक भारत श्रेष्ठ भारत आदि थीम के द्वारा समाज को सन्देश दिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य, श्री जे.के शर्मा ने कहा, ₹राम के चरित्र से हमें जीवन के मूल्यों की शिक्षा मिलती है। उनकी निष्ठा, धैर्य और सत्य के प्रति समर्पण से हमें सीखने का अवसर मिलता है।₹ श्री शर्मा ने आगे कहा, ₹हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को न केवल शिक्षा देना है, बल्कि उन्हें अच्छे नागारक बनाना भी है।इस तरह के क्रिया कलापो (रंगोली, दिया सजाना, राम जैसे आदर्श चरित्र के मंचन से हमें यह सीखने का अवसर मिलता है कि कैसे हम अपने जीवन में त्याग के साथ सत्य, निष्ठा और धैर्य को अपनाएं।₹ कार्यक्रम के अंत में, श्री शर्मा ने विद्यार्थियों और उनके परिवार को धनतेरस,दीपावाली और छठ की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की ।

दीपावली के अवसर पर ग्रीनलैंड पब्लिक स्कूल में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

रंग-बिरंगी सजावट और प्रतियोगिता से बच्चों ने मनाई दीपावली

संवाददाता : चौपारण

पांडेयबारा चपरीकला स्थित ग्रीनलैंड पब्लिक स्कूल में दीपावली के शुभ अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। यह कार्यक्रम बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था, ताकि वे दीपावली जैसे विशेष पर्व पर अपनी कला का प्रदर्शन कर सकें और त्योहार की खुशियों को साझा कर सकें। रंगोली प्रतियोगिता में छात्रों को चार अलग-अलग ग्रुपों में बाँटा गया जिससे उनकी रचनात्मकता को एक टीम के रूप में दिखाने का अवसर मिल सके। चारों ग्रुपों ने अपनी-अपनी रचनाओं में अनोखे और रंग-बिरंगे डिजाइनों का प्रदर्शन किया, जो न केवल उनकी कला को दशार्ते थे, बल्कि उनके उत्साह और पर्व के प्रति उनकी भावना को भी प्रकट कर रहे थे। सभी समूहों ने एक से बढ़कर एक सुंदर रंगोली बनाई, जिनमें दीपावली के प्रतीकों, फूलों और पारंपरिक डिजाइनों का अनोखा समावेश था। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तरन्नुम ग्रुप, द्वितीय स्थान पर सौम्या ग्रुप एवं तीसरे स्थान पर शशांक ग्रुप रही। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों में तरन्नुम प्रवीण, सादिया खातून, मीनाक्षी कुमारी, आफरीन प्रवीण शामिल रहें। स्कूल के निदेशक पंचम कुमार पांडेय ने बच्चों की रंगोली देख उनकी सराहना की और कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बच्चों के अंदर छिपी प्रतिभा को उजागर करती हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेते हुए देखकर यह महसूस हुआ कि हमारे छात्र काफी रचनात्मक हैं। इस प्रकार के आयोजन से उनकी कला को निखारने का मौका मिलता है और यह उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है। उन्होंने दीपावली के त्योहार के महत्व पर भी प्रकाश डाला और छात्रों को अपने पारंपरिक त्योहारों से जुड़ने का संदेश दिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में धनंजय कुमार, अंजली सिंह, सोहानी कुमारी, अंजना सिंह, रीता कुमारी, रशिक सिंह, राजा गुप्ता आदि शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बच्चों को रंगोली बनाने में मार्गदर्शन किया और उनके साथ मिलकर प्रतियोगिता को सफलतापूर्वक संपन्न कराया।

आजसू प्रत्याशी अजहर इस्लाम के जनसभा में लोगों का उमड़ा जन सैलाब

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ मंगलवार को पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र में आजसू के जनसभा मे लोगो की ताबड़तोड़ भीड़ देखी गई, एनडीए प्रत्याशी अजहर इस्लाम के रोड शो में आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो भी उपस्थित हुए एनडीए गठबंधन आजसू के द्वारा हरिण्डाँगा हाइस्कूल मैदान मे एक जन सभा का आयोजन किया गया था जिसमे आजसू सहित एनडीए के सहयोगी भाजपा के जिला अध्यक्ष सहित ज़िलें और प्रदेश के पदाधिकारी मौजूद थे इस मंच से आजसू के जिला अध्यक्ष ने कहा अब पाकुड़ की जनता जाग चुकि है अब नहीं बटेगी जाति धर्म और संप्रदाय पर बात होंगी पाकुड़ विद्यानसभा की विकास पर आप सभी जानते है पाकुड़ विधानसभा का विकास के नाम पर केवल कमीशन खोरी हुई है जिसे मे नहीं एक स्वतंत्र जांच एजेंसी ईडी कहती है इस जनसभा को सम्बोधित करते हुए यहाँ तक कह डाला इस बार परिवर्तन नहीं किया तो और मौका नहीं मिलेगा आजसू प्रत्याशी अजहर इस्लाम ने कहा वोट के समय एन आर सी और बांग्लादेशी याद आता है

Format C-7

Information regarding individuals with pending criminal cases, who have been selected as candidates, along with the reasons for such selection, as also as to why other individuals without criminal antecedents could not be selected as candidates

(As per the Commission's directions issued in pursuance of the Order dated 13.02.2020 of the Hon'ble Supreme Court in contempt petition(C) no. 2192 of 2018 in WP(C) no. 536 of 2011)

Name of Political Party : BAHUJAN SAMAJ PARTY
Name of the Election : Legislative Assembly General Election 2024
Name of State/UT : JHARKHAND PHASE-2
Name of the Constituency : **39 - NIRSA**
Name of the Candidate : **RANJEET BAURI**

Sl.No.			
1.	Criminal antecedents		
	a.	Nature of the offences	Section 147, 342, 323, 270, 427 of IPC
	b.	Case No.	Case No. 121/2013
	c.	Name of the Court	J M Ranchi
	d.	Whether charges have been framed or not (Yes/No)	NIL
	e.	Date of conviction, if any	NIL
	f.	Details of punishment undergone, if any	NIL
	g.	Any other information required to be given	NIL
2.	The reasons for the selection of the candidate. Selection shall be with reference to the qualifications, achievements and merit of the candidate, and not mere "winnability" at the polls (not more than 100 words)		In comparison to the other candidates and their history, it was found to be suitable being the candidate has stated that false FIR has been lodged against him
3.	Reasons as to why other individuals without criminal antecedents could not be selected as candidates (not more than 100 words)		The offences are to be based on political Vendetta. His image supported by the local office bearers of the party as clean and good.

--- sd ---
Signature of office bearer of the Political Party
Name and designation : Sridhar (National Treasurer)

संक्षिप्त समाचार

37 साल पुरानी वाद में अभियुक्तगण को कोर्ट ने रिहा किया

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद / व्यवहार न्यायालय में एडिजे पांच उमेश कुमार के कोर्ट में देवकुंड थाना कांड संख्या -23/1987,एस टी आर-341/90 में साक्ष्य के अभाव में 08 अभियुक्तों को भादंवि धारा 364,366 में दोषमुक्त किया है, अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि इस वाद के अभियुक्त रंगनाथ दुबे, मुसाफिर यादव, मंगरू यादव, रामविलास यादव की मृत्यु हो गई है , अभियुक्त राजू यादव, राजेश्वर यादव, बागेश्वरी शर्मा, त्रिलोकी दुबें, जनार्दन प्रसाद वर्मा, विजय यादव,रामईकबाल महतो, रामनरेश यादव को दोषमुक्त किया गया है बाकी तेरह अन्य अभियुक्तों के कुर्की के आदेश के बावजूद अनुपस्थित रहने व भविष्य में उपस्थित न होने के सम्भावना देखते हुए फरार घोषित करते हुए सभी फरार तेरह अभियुक्तों को वाद पृथक किया गया है, एपीपी धर्मराज शर्मा ने बताया कि पीड़ित परिवार के गोपाल साव बुधाईकला उपहरा ने अपने गवाही में कहा था घटना में शामिल लोगों को नहीं चिन्हते है घटना में एक बच्चे का अपहरण हुआ था जो पुलिस के सहयोग से घटना के छः माह बाद बरामद कर परिवार को सुपुर्द किया गया था।

अवैध महुआ चुलाई व शराब निर्माण एवं बिक्री स्थलों को किया गया ध्वस्त

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर.आसन्न विधान सभा चुनाव के मद्देनजर अधीक्षक उत्पाद, देवघर के निदेर्शानुसार अवैध शराब के उत्पादन एवं बिक्री के रोकथाम हेतु छापामारी अभियान चलाया गया। छापामारी के क्रम में *करों* थाना अंतर्गत *भोरंडीहा* व *पथरोल थाना* अंतर्गत *हड़हंजा* में स्थित अवैध महुआ चुलाई शराब निर्माण एवं बिक्री स्थलों को ध्वस्त किया गया। अवैध महुआ चुलाई शराब के निर्माण एवं बिक्री में संलिप्त फरार व्यक्तियों को चिन्हित कर संबंधित के विरुध्द विधिसम्मत कार्यवाई की जाएगी। जप्त प्रदर्श का विवरण निम्न है जावा महुआ - 700.00 डॅअवैध महुआ चुलाई शराब - 130.00 लीटर जबकि छापामारी दल माणिकांत कुमार - अवर निरीक्षक उत्पाद. किशोर कुमार - अवर निरीक्षक उत्पाद .मिथिलेश कुमार- अवर निरीक्षक उत्पाद शामिल थे.

विद्यालयों में मनाया गया आयुर्वेद दिवस, स्वस्थ जीवनशैली के लिए आयुर्वेद अपनाएं -दिलीप

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

सारठ/ भारत सरकार आयुष मंत्रालय एवं विभागीय निदेर्शानुसार मंगलवार को सारठ प्रखंड अंतर्गत सभी विद्यालयों में धनवंती ऋषि के जन्म दिवस पर विद्यालय में आयुर्वेद दिवस के रूप में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन कर छात्र-छात्राओं को औषधीय गुण वाली पौधे का संरक्षण संवर्धन के बारे में जानकारी दी गई। आयुर्वेद के प्रति जागरूकता फैलाने का शपथ, वाद विवाद प्रतियोगिता हस्तलेखन चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बीपीओ उदय शंकर सिंह ने बताया कि स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर विभागीय स्तर पर क ई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। आज सभी विद्यालयों में आयुर्वेद दिवस समारोह आयोजित करने का निर्देश दिया गया था। वहीं उत्क्रमित उच्च विद्यालय बेलवरना के सहायक शिक्षक दिलीप कुमार राय ने बताया कि बच्चों को अभी से स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। सभी स्कूलों में आरोग्य दूत बनाया गया है। पूर्व से विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। मौके पर प्रभारी प्रधानाध्यापक विश्वनाथ पंडित, राजेश्वर सिंह,ललन साह, अंकिता सिन्हा समेत अन्य बच्चे उपस्थित थे।

पुनः खोल दिया गेस्ट हाउस में अलमीरा व सोफे आदि का दुकान, डीडीसी ने खाली करवाया था दुकान

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

बाजार स्थित गेस्ट हाउस में अलमीरा और सोफे आदि का दुकान पुनः खोल दिया। जबकि पहले भी अलमीरा और सोफे आदि का दुकान खोल कर रखा था। इसकी जानकारी देवघर डीडीसी को होने पर उक्त दुकान खाली करवाया था। जबकि यह देवीपुर का एक मात्र गेस्ट हाऊस है। जहां लोगों का गेस्ट हाउस जैसे सभी सुविधाएं से लैश है। लेकिन अलमीरा और सोफे आदि का दुकान खोलकर इस-ाका पूरे स्वरूप और उद्देश्य को बदल कर रख दिया है। आखिर पुनः दुकान किसके सह पर खोल दिया! यह जांच का विषय है।

बरकट्ठा में भाजपा को छोड़कर दर्जनों लोग झामुमो में हुए शामिल

संवाददाता: बरकट्ठा

झामुमो आवसीय कार्यलय में पूर्व पंसस महेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में दर्जनों भाजपा कार्यकर्ता पार्टी छोड़कर झामुमो में शामिल हो गये। झामुमो प्रत्याशी जानकी प्रसाद यादव, प्रखंड अध्यक्ष कुदुस अंसारी केन्द्रीय सदस्य बासुदेव महतो ने सभी को पार्टी का सदस्यता ग्रहण कराया। शामिल लोगों ने झामुमो की सरकार को गरीबों का मसीहा बताया। सरकार ने गरीबों को लिए कई कल्याणका-री योजनाएं जैसे बिजली बिल माफी, दो सौ युनिट बिजली फ्री, केसीसी ऋण माफ जैसे कई योजनाएं लाई जिसमें हम गरीब को लाभ मिल रहा है। हम सभी हेमंत सोरेन कि सरकार बनाने के लिए झामुमो प्रत्याशी जानकी प्रसाद यादव को वोट देकर विजय बनाएंगे। झामुमो में शामिल होने वालों में ग्राम गयपहाडी निवासी राजू राणा, ध्रुव नारायण पासवान, केदार प्रसाद, खगेन्द्र प्रसाद, महेंद्र पंडित, राजेंद्र प्रसाद, राजकुमार प्रसाद, महबूब अंसारी, संतोष कुमार, श्यामलाल प्रसाद, रुपलाल पंडित समेत अन्य हैं।

हुसैनाबाद उत्तरी ज़िप सदस्य राजू मेहता ने रक्तदान कर एक मरीज की बचाई जान

हुसैनाबाद: कृष्णा यादव

हुसैनाबाद उत्तरी ज़िप सदस्य राजू मेहता उर्फ.एस पी मेहता ने मंगलवार को रक्त दान कर एक मरीज की जान बचाई। प्राप्त जानकारी के अनुसार रांची निवासी संतोष पासवान की पुत्री प्रियंका कुमारी का तबीयत खराब हो गई। उन्हें एबी ब्लड ग्रुप की आवश्यकता थी।काफी खोजबीन के बाद भी उन्हें एबी ग्रुप का ब्लड नहीं मिला।प्रियंका के परिजनों ने इसकी सूचना जिप सदस्य राजू मेहता को दिया। जिसके बाद जिप सदस्य राजू मेहता ने रक्त दान कर उस-ाकी जान बचाई। प्रियंका के परिजनों ने हुसैनाबाद ज़िप सदस्य राजू मेहता के प्रति आभार जताया। राजू मेहता ने कहा की रक्त दान को महा दान कहा जाता है। समय पर रक्त नहीं मिलने से कई मरीजों का जान चला जाता है।रक्त दान कर आप किसी व्यक्ति की जान बचा सकते हैं साथ ही रक्तदान करने से आपका शरीर भी स्वस्थ्य रहता है।उनके द्वारा किए गए इस कार्य से क्षेत्र के लोग उनकी सराहना कर रहे हैं।

कांग्रेस प्रत्याशी निसात आलम के नामांकन में जनसभा का हुआ आयोजन

कांग्रेस समर्थकों का जनसैलाब देख विपक्षी दलों के उड़े होश

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़: पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र में मंगलवार को इंडिया गठबंधन प्रत्याशी आलमगीर आलम की धर्मपत्नी निसात आलम ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया इस अवसर पर पाकुड़ नगर स्थित रानी ज्योतिर्मयी स्टेडियम में एक जनसभा का आयोजन भी किया गया था . जहां कांग्रेस समर्थकों का जनसैलाब उमड़ पड़ी जनसभा में कांग्रेस और झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकताओं और पदाधिकारी ने मंच साझा किया मुख्य अतिथि के रूप में लोहरदगाह के कांग्रेस सांसद एवं झा-रखंड मुक्ति मोर्चा के राजमहल लोकसभा से सांसद विजय हसदा और कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुखदेव भगत मौजूद रहे. कांग्रेस प्रत्याशी आलमगीर आलम की पत्नी निसात आलम ने कहा कि पाकुड़ की जनता का हमें सपोर्ट चाहिए। मेरे पति ने पाकुड़ के विकास के लिए हमेशा तत्पर और गंभीर रहे रहे हैं ,उनके अधूरे काम को हमें आगे बढ़ाना है। जनता हमे सहयोग करे मौका दे निश्चित रूप से पाकुड़ में विकास की गंगा बहेगी. पाकुड़ के लोगों का अपार समर्थन और सहयोग हमे मिल रहा है, निश्चित रूप से पाकुड़ के लोग हमें जिताकर विधानसभा भेजने का काम करेंगे. जनसभा में राजमहल सांसद विजय हांसदा ने कांग्रेस प्रत्याशी निसात आलम को अपनी मां से संबोधित करते हुए कहा कि मैं अपनी मां के लिए वोट मांगने आया हूं। मैं खुशकिस्मत हूं कि एक मां के लिए आप सबों से वोट मांग रहा हूं। मेरी जीत के लिए इस मां ने जितनी मेहनत की है, मैं खुश हूं कि उस मां के लिए मुझे मेहनत करने का मौका मिल रहा है। सांसद विजय हांसदा ने कहा कि आपने पिछले लोकसभा चुनाव में जिस तरीके से मुझे जीताने का काम किया है, उससे भी ज्यादा ताकत से इंडिया गठबंधन प्रत्याशी को जिताना है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को निशाने पर लिया और कहा कि भाजपा के लोग हेमंत सोरेन की सरकार की मंईयां सम्मान योजना से घबरा गई है। इसलिए भाजपा वाले गोगो दीदी योजना लाने की बात कर रही है। मैं बीजेपी वालों से कहना चाहता हूं कि आप सिर्फ झारखंड में ही क्यों, पूरे देश में गोगो दीदी योजना लाएं। क्योंकि केंद्र में आपकी सरकार है और आपको रोकने वाला कोई नहीं है। मौके पर कांग्रेस प्रदेश महासचिव तनवीर आलम व उदय लखवानी, कांग्रेस पाकुड़ जिला अध्यक्ष श्रीकुमार सरकार, कांग्रेस पाकुड़ प्रखंड अध्यक्ष मंसारुल हक, साहिबगंज जिला अध्यक्ष बरकत खान, झारखंड मुक्ति मोर्चा पाकुड़ जिला अध्यक्ष श्याम यादव, यूथ कांग्रेस जिला अध्यक्ष तस्लीम आरिफ बुलेट, अधेर्दु शेखर गांगुली उपस्थित रहे. मंच का संचालन अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष शाहीन परवेज द्वारा किया गया...

मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से सेल्फी पॉइंट का हुआ उद्घाटन

हस्ताक्षर अभियान में शामिल होकर मतदाताओं ने मैं मतदान करूंगा बोर्ड पर किया हस्ताक्षर

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो,कुन्दन पासवान

चतराः समाहरणालय परिसर में मंगलवार को स्वीप कार्यक्रम के तहत जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त चतरा रमेश घोलप,सामान्य प्रेक्षक सिमरिया पट्टानशेट्टी रवि शुभाष, सामान्य प्रेक्षक चतरा अमरुतेश कालिदास, व्यय प्रेक्षक बुद्रुक गणेश बालासाहेब, पुलिस प्रेक्षक बी नवीन कुमार, पुलिस अधीक्षक विकास कुमार पांडेय द्वारा संयुक्त रूप से सेल्फी पॉइंट का उद्घाटन किया गया। मौके पर उपस्थित जिले के वरीय अधिकारी समाहरणालय परिसर के कर्मी, मतदाताओं ने सेल्फी पॉइंट के साथ सेल्फी खिचाई। वहीं उक्त मौके पर उपस्थित पदाधिकारियों एवं कर्मियों को जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा मतदाता शपथ दिलाई गई। साथ ही आयोजित हस्ताक्षर अभियान में सभी ने शामिल होकर मैं मतदान करूंगा बोर्ड पर हस्ताक्षर किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य जिले के मतदाताओं को जागरूक कर अधिक से अधिक मतदान कराना है। उक्त कार्यक्रम में उप विकास आयुक्त अमरेंद्र कुमार सिन्हा, अपर समाहर्ता अरविंद कुमार, अनुमण्डल पदाधिकारी चतरा जहूर आलम, अनुमण्डल पदाधिकारी सिमरिया सन्नी राज, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी चतरा/सिमरिया समेत अन्य संबंधित पदाधिकारी/कर्मी उपस्थित थे।

तम्बाकू मुक्त युवा अभियान 2.0 को लेकर चलाया गया जागरूकता अभियान

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत सिविल सर्जन, देवघर डॉ० युगल किशोर चौधरी एवं जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी सह-नोडल पदाधिकारी एन०सी०डी० कोषांग देवघर के निदेर्शानुसार दिनांक 29/10/2024, दिन मंगलवार को, संत कोलोम्बस स्कूल,बिलासी टाउन,देवघर में तंबाकू निषेद पर कार्यशाला का आयोजन किया गया ।जिसमे डॉ०मनीष शेखर के द्वारा बतलाया गया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को तंबाकू के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूक करना और उन्हें इस खतरनाक आदत से दूर रखना है। इस कार्यक्रम में बच्चो को तम्बाकू से होने वाले बीमारियों जैसे कैंसर, अस्थमा, लकवा, श्वास संबधित बीमारी के बारे में चर्चा की गयी, तथा इससे होने वाले आर्थिक और सामाजिक दुष्प्रभाव के बारे मे भी बतलाया गया । विद्यालयों के अंदर और बाहर दोनों स्थानों पर साकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए का प्रयास किया गया साथ ही साथ कोटपा 2003 अधिनियम से संबंधित प्रावधनों को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया इसमे बतलाया गया की तंबाकू नियंत्रण अधिनियम कोटपा-2003 के मुख्यतः चार धार-ाओं के बारे में बिस्तर से बताया गया । सर्व प्रथम धारा 4 के बारे में बतलाया गया कि तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 4 के अनुसार किसी भी सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करना प्रतिबंधित है तथा इसके उल्लंघन करने पर □200 तक का जुमार्ना वसूला जा सकता है । धारा 5 में बतलाया गया कि तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 5 के अनुसार किसी भी तंबाकू उत्पादकों के प्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष विज्ञापन प्रोत्साहन एवं तंबाकू कंपनियों द्वारा किसी इवेंट का प्रयोजन करना अथवा स्पॉन्सरशिप करना प्रतिबंध है, इसके उल्लंघन करने पर □1000 तक का जुमार्ना अथवा 2 साल तक का करवास अथवा दोनों हो सकता है । धारा 6 ए, तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 6ए के अनुसार किसी भी अवयस्क या बच्चों को तंबाकू उत्पादन बेचना या उसके द्वारा बेचवाना प्रतिबंध है इसके लिए उल्लंघन करता को □200 तक का जुमार्ना लिया जा सकता है । तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 6बी के अनुसार किसी भी शिक्षण संस्थान के 100 गज के दायरे में तंबाकू उत्पादन बेचना अपराध है, तथा उल्लंघन करता के द्वारा □200 तक का जुमार्ना वसूला जा सकता है ।

तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 7 के अनुसार किसी भी तंबाकू उत्पादकों के पैकेट के मुख्य भागों पर 85% हिस्से पर चित्रित स्वास्थ्य चेतावनी के बिना नहीं बचा जा सकता है तथा ऐसे उल्लंघन करने पर 5000 तक का जुमार्ना तथा 2 वर्ष तक का कारावास या दोनों हो सकता है ।

कार्यक्रम के दौरान स्कूली बच्चों को तंबाकू दुष्परिणाम के बारे में बड़े ही रोचक तरीके से समझाया गया, साथ ही साथ बच्चों के बीच तम्बाकू निषेद पर भाषण प्रतियोगिता कराई गई एवं प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चे बैभव कुमार,आदर्श कुमार एवं सिमरन खावारे को एन०सी०डी० कोषांग, देवघर द्वारा पुरष्कृत किया गया ।

भाजपा नेता ने कहा जरूरतमंद लोगों को पीएम आवास की सूची में नाम जोड़ें

दिव्य दिनकर,संवाददाता रोहित कुमार

चकाईःभाजपा नेता मनोज पोद्दार अपने क्षेत्र भ्रमण के दौरान जब आदिवासी गांव आमाटांड़ पहुंचे तो ग्रामीणों ने उन्हें घेर कर अपनी पीढ़ा सुनाते हुए कहा देख लीजिए भैया हमारे घर किस प्रकार टूटे फूटे हुए हैं और इस गांव के अधिकांश लोगों की माली हालत दयनीय है घर के अभाव में बारिश के दिनों में बड़ी तकलीफ होती है। मौके पर मौजुद ग्रामीण आदिवासी महिला चमेली किस्कू ने कहा हमें अपने हक का अधिकार दिलाईये पीएम आवास योजना का लाभ हमें नहीं मिल पा रहा है, हमारे साथ भेदभाव होता है। वहीं बड़की हांसदा, छोटकी टुड्डू, मुन्नी मरांडी, फुलमुनी हांसदा ने भी अपने अधिकार की बात कही। ग्रामीणों की बातों को सुनकर मनोज पोद्दार भावुक हुए और फॉरेन चकाई पंचायत के आवास सहायक को फोन लगाया और कहा जरुरत मंद लोगों का नाम सूची में शामिल करें भेदभाव करने की शि-ाकायत मिल रही है जवाब में सहायक ने आश्वाशन देते हुए कहा आमाटांड़ गांव से 25 लोगों को जोडने हेतु चिन्हित किया है उन्हें जोड़ लिया जाएगा। पोद्दार ने ग्रामीणों को आश्वासन देते हुए कहा कहा कि वे इस विषय पर प्रखंड विकास पदाधिकारी चकाई से मुलाकात कर पर बात करेंगे ताकि ग्रामीणों को इस-ाका उचित लाभ मिल सके। मौके पर भाजपा मंडल अध्यक्ष सूरजमल मुर्मू ग्रामीण भोला मुर्मू, तन्नू मुर्मू, निकोलस मुर्मू, जुगल मुर्मू, सुरेश मुर्मू, सुमन मुर्मू सहित कई लोग मौजूद थे।

संदीपनी पब्लिक स्कूल में प्री प्राइमरी के बच्चों ने मनाई दीपावली

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

झौसागढ़ी,स्थित संदीपनि पब्लिक स्कूल में प्री प्राइमरी वर्ग के बच्चों के बीच दीपावली उत्सव का उल्लासपूर्वक आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी बच्चे रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजकर आए और पबच्चे अपने अभिभावकों की सहायता से एक-एक सुंदर दीपक सजाकर लाए थे। कार्यक्रम की शुरूआत मां लक्ष्मी और भगवान गणेश को पुष्प अर्पित कर की गई, जिस-ाके पश्चात शिक्षिकाओं ने बच्चों को दीपावली के महत्व के बारे में जानका-री दी। शिक्षिकाओं ने बच्चों को बताया कि दीपावली का त्यौहार भगवान श्रीराम के अयोध्या आगमन की खुशी में मनाया जाता है। लंका विजय के बाद, भगवान श्रीराम ठीक 20 दिनों के पश्चात अयोध्या वापस लौटे थे और उसे दिन अमावस्या थी काली अंधेरी रात थी और उनके के स्वागत हेतु अयोध्यावासियों ने अपने-अपने घरों के द्वारों पर दीपक जलाकर पूरे नगर को प्रकाशित किया था।

आम्रपाली परियोजना में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का किया गया आयोजन

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो,कुन्दन पासवान

चतराः आम्रपाली कोल परियोजना क्षेत्र के जीएम कार्यालय परिसर में सोमवार को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहां महाप्रबंधक अमरेश कुमार सिंह द्वारा अधिकारियों, कामगारों, विद्यार्थियों व ग्रामीणों को जीवन में ईमानदारी, विधिसम्मत कर्तव्यों का निर्वहन, भ्रष्टाचार मुक्त आचरण,जनहितों के प्रति समर्पण तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई।जीएम श्री सिंह ने कहा कि देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक प्रगति में भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है, जिसे सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों को हीं अपनाकर मुक्त किया जा सकता है। दूस-री ओर,परियोजना क्षेत्र के कुरहापतरा खेल मैदान में बॉलीवॉल तथा क्रिकेट का सद्भावना मैच खेला गया। जिसमें परियोजना उच्च विद्यालय टंडवा बनाम उत्क्रमित उच्च विद्यालय सेरनदाग के हुवे मैच में टंडवा विजयी हुआ।जबकि सीसीएल बनाम पत्र-ाकार एकादश के बीच हुवे क्रिकेट मैच में पत्रकारों को हार का सामना करना पड़ा। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों द्वारा भ्रष्टाचार पर केंद्रित नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई, जहां मौजूद लोगों ने जमकर तालियां बजाये । सीसीएल महाप्रबंधक श्री सिंह ने विजेता व उप-विजेता टीम को ट्रॉफी,जर्सी तथा मेडल देकर सम्मानित किया। इस मौके पर परियोजना पदाधिकारी मो. एकराम, सीएस-ाआर अधिकारी मोहसिन रजा, सीसीएल के तमाम अधिकारी व कर्मी, पत्रकारों समेत विस्थापित- प्रभावित क्षेत्र के सैंकड़ों ग्रामीण मौजूद थे।

Format C-7

Information regarding individuals with pending criminal cases, who have been selected as candidates, along with the reasons for such selection, as also as to why other individuals without criminal antecedents could not be selected as candidates

(As per the Commission's directions issued in pursuance of the Order dated 13.02.2020 of the Hon'ble Supreme Court in contempt petition(C) no. 2192 of 2018 in WP(C) no. 536 of 2011)

Name of Political Party : BAHUJAN SAMAJ PARTY
Name of the Election : Legislative Assembly General Election 2024
Name of State/UT : JHARKHAND PHASE-2
Name of the Constituency : **15- DEODHAR**
Name of the Candidate : **GYAN RANJAN**

Sl.No.			
1.	Criminal antecedents		
	a.	Nature of the offences	Section 147, 148, 353 of IPC
	b.	Case No.	Case No-168/2022
	c.	Name of the Court	Court Deodhar
	d.	Whether charges have been framed or not (Yes/No)	NO
	e.	Date of conviction, if any	NIL
	f.	Details of punishment undergone, if any	NIL
	g.	Any other information required to be given	NIL
2.	The reasons for the selection of the candidate. Selection shall be with reference to the qualifications, achievements and merit of the candidate, and not mere "winnability" at the polls (not more than 100 words)		In comparison to the other candidates and their history, it was found to be suitable being the candidate has stated that false FIR has been lodged against him
3.	Reasons as to why other individuals without criminal antecedents could not be selected as candidates (not more than 100 words)		The offences are to be based on political Vendetta. His image supported by the local office bearers of the party as clean and good.

--- sd ---
Signature of office bearer of the Political Party
Name and designation : Sridhar (National Treasurer)

जस्टिस चंद्रचूड़ : एक विरासत जिसे भुला देना ही बेहतर होगा

>> विचार

“ जस्टिस चंद्रचूड़ के कार्यकाल का सबसे दुखद व निराशाजनक पहलू संभवतः यह रहा कि इस दौरान हजारों सामाजिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों, असहमति जताने वालों, शिक्षाविदों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को बिना मुकदमे के सालों से जेल में डाल दिया गया है। उमर खालिद की जमानत अर्जी पर सुनवाई लगातार टलती रही है। कई बार जजों ने इस मामले से बिना कोई कारण बताए खुद को अलग कर लिया है।

अभय शुक्ला

देश के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ इन दिनों अकसर ऐसी बातें कर रहे हैं और चिंचित हैं कि अगले महीने जब वे अपने पद से रियाटर होंगे वे अपने पीछे क्या विरासत छोड़कर जाएंगे। और हो सकता है कि वे कोई विरासत जरूर छोड़कर जाएं। चंद्रचूड़ सीजेआ के पद पर उस समय आसीन हुए थे जब देश के हाल के इतिहास के शायद सबसे महत्वपूर्ण दौर में था। ऐसा दौर जिसमें हर लोकतांत्रिक और मानवतावादी सिद्धांत को एक अबाध चुनावी मशीन और मनमानी करने वाली सरकार द्वारा कुचला जा रहा था। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण दौर था क्योंकि उनके पहले इस पद पर रहे लोगों ने देश को न सिर्फ निराश किया था बल्कि रिटायरमेंट के बाद के लाभों के लिए अपमानजनक तौर-तरीका अपनाया था। हालांकि इससे पहले कभी भी देश ने मुख्य न्यायाधीश के पद और उसके उत्तराधिकारी से बहुत अधिक उम्मीदें नहीं रखीं थीं। लेकिन, तो चंद्रचूड़ की विरासत यही होगी कि उन्होंने भी देश को निराश ही किया। शेक्सपेयर ने कहा था, ‘ईमानदारी सबसे बेहतक विरासत होती है’, लेकिन दुखद पहलू हैं कि माननीय मुख्य न्यायाधीश ईमानदार नहीं रहे, न हमारे साथ और न ही अपने साथ। अदालत के बाहर सम्मेलनों में, भाषणों में, कार्यक्रमों में, दीक्षांत समारोहों और यहां तक कि कुछ फैसलों में की गई उनकी निजी टिप्पणियों में भी चंद्रचूड़ कुछ अहम बातें कहते रहे हैं। मसलन, इनमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धार्मिक बहुलवाद, संवैधानिक सुरक्षा उपायों, कार्यपालिका की जवाबदेही के लिए न्यायालय की जिम्मेदारियों पर जोर देना आदि शामिल है ।दिया है। लेकिन अपनी अदालत की चाहरदीवारी के अंदर वे अपने इस इन दृढ़ विश्वास और साहस से दूर रहे। कई बार लोगों को आश्चर्य भी होता रहा कि क्या उनके पास कोई दृढ़ विश्वास है भी या नहीं। अलेकजेंडर पोप के शब्दों में: वह किसी को जख्मी करने को तो तैयार थे, लेकिन हमला करने से डरते थे। किसी न्यायाधीश की विरासत की यह बुनियाद तो नहीं हो सकती। आने वाले वक्तों में सुप्रीम कोर्ट के रिकॉर्ड अपनी कहानी खुद ही बयां करेंगे। जस्टिस चंद्रचूड़ के पास बहुत से ऐसे मौके थे जब वह चीजों को दुरुस्त कर सकते थे, या संस्थाओं की स्वायत्ता बहाल करने (चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति का मामला), बेलगाम राज्य सरकारों की मनमानी (यूपी, उत्तराखंड और हरियाणा जैसे राज्यों में बुलडोजर एक्शन), नागरिकों की गैरकानूनी निगरानी (पेगासस मामला), राज्यों की दर्जा बहाली (जम्मू-कश्मीर), गैरकानून तरीके से गिराई गई वैध तरीके से चुनी गई सरकारों की बहाली (महाराष्ट्र), चुनावी प्रक्रिया में भरोसा और विश्वसनीयता स्थापित करना (ईवीएम, वीवीपैट के मुद्दे), चुनाव आयोग की उसके संदिग्ध कदमों और फैसलों पर गैर-जवाबदेही, डाले गए वोट और गिने गए वोटों में अंतर, आदर्श चुनाव संहिता के उल्लंघन पर पक्षपात आदि पर जस्टिस चंद्रचूड़ कुछ कर सकते थे। मगर यह हो न सका। जस्टिस चंद्रचूड़ के कार्यकाल का सबसे दुखद और निराशाजनक पहलू संभवतः यह रहा कि इस दौरान हजारों सामाजिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों, असहमति जताने वालों, शिक्षाविदों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को बिना मुकदमे के सालों से जेल में डाल दिया गया है। उमर खालिद की जमानत अर्जी पर सुनवाई लगातार टलती रही है। कई बार जजों ने इस मामले से बिना कोई कारण बताए खुद को अलग कर लिया है। भीमा-कोरेगांव मामले में जेल भेजे गए लोगों को किस्तों में जमानत दी जा रही है, मानो इंसाफ बांटी जाने वाली कोई शय हो। कुछ की तो जेल हिरासत में ही मौत हो गई। फादर स्टैन स्वी और प्रोफेसर जी एन साईबाबा की मिसालें हमारे सामने हैं। और, अयोध्या के राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद मामले पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को कौन इतिहासकार भूल सकता है जिसमें सबूतों के आधार पर नहीं, बल्कि सिर्फ बहुसंख्य समुदाय की आस्था के आधार पर फैसला सुना दिया गया। क्या इससे देश और न्यायपालिका का सिर शर्म से नहीं झुक जाना चाहिए? इस फैसले के बाद सामने आईं वह तस्वीरें जिसमें हिंदू पक्ष के हक में फैसला सुनाने वाले जज एक फाइव स्टार होटल में वाइन के साथ डिनर कर जश्न मनाते हुए दिखे थे। यह भी देश के दुखद इतिहास में इसी दौर में दर्ज हुआ है। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की ही नाक के नीचे ही केंद्र सरकार को कॉलेजियम को और भी कमजोर करने की छूट दी गई, जिसमें जजों की नियुक्ति में देरी, चयन और चुने गए या सिफारिश किए गए नामों पर रणनीतिक चुप्पी साध लेना आदि शामिल है। यही हश्र दर्जनों बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाओं (हैबियस कॉर्पस) का हुआ है जो अब अदालत की रजिस्ट्री में दफून हैं। सेबी (हिंडेनबर्ग) और पेगासस जांच कभी भी तार्किक निष्कर्ष तक नहीं पहुंची। एक जबरन वसूली रैकेट की तरह चलने वाले चुनावी बांड के फैसले के साथ खुले समस्याओं के एक पिटारे को फिर से जल्दबाजी में बंद कर दिया गया। लंबे-लंबे भाषण और चटकीले जुमलों के बावजूद किसी सरकारी अधिकारी को सही मायनों में किसी दोष के लिए सजा नहीं दी गई। यहां तक कि चंडीगढ़ के मेयर चुनाव में खुलेआम धांधली के सबूतों के बावजूद उसे कोई सजा माननीय चीफ जस्टिस ने नहीं सुनाई। न किसी एनकाउंटर स्पेशलिस्ट, न किसी बुलडोजर ब्यूरोक्रेट या किसी सरकारी एजेंसी को किसी गलती के लिए जिम्मेदार ठहराया ही नहीं गया। जबकि कई मामलों में दूसरी अदालतों ने इन्हें जवाबदेह माना था। यह सच है कि श्री चंद्रचूड़ खुद इन सभी खामियों और गलतियों के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं थे, क्योंकि कई फैसले और मामले दूसरी बेंचों ने तय किए थे। लेकिन मुख्य न्यायाधीश के नाते दोष तो उन्हें साझा करना ही होगा। आखिरकार, वह संस्था के प्रमुख, इसके मुख्य प्रशासक, सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष और सबसे महत्वपूर्ण, मास्टर ऑफ रोस्टर हैं। कहावत है कि अगर तारीफें आप हासिल करते हैं, तो फिर आलोचना भी आपको ही सहनी चाहिए। चीफ जस्टिस कुछ हाईकोर्ट्स में धीरे-धीरे बढ़ते राजनीतिकरण, जजों द्वारा खुलेआम धर्मों के प्रति निष्ठा व्यक्त करने, उनके फैसलों में धार्मिक पूर्वाग्रह, न्यायाधीशों के राजनीतिक दलों में शामिल होने और यहां तक कि सेवानिवृत्त होने के तुरंत बाद चुनाव में खड़े होने और सेवानिवृत्त न्यायाधीशों के धार्मिक सम्मेलनों में हिस्सा लेने को खामोशी से निहारते रहे। यह मुद्दा इन पूर्वाग्रहों की वैधता का नहीं बल्कि संवैधानिक मूल्यों की भावना का है, जिसे बनाए रखना न्यायपालिका की जिम्मेदारी है। जैसा कि जस्टिस चंद्रचूड़ खुद हमें अक्सर याद दिलाते रहे हैं कि, किसी कानून की भावना उसके शब्दों जितनी ही महत्वपूर्ण होती है। और इसलिए उनके लिए यह ज़रूरी था कि वे ज़ोर के साथ स्पष्ट रूप से बोलते, अपने साथी जजों को उनके रवैये पर टोकते और सुप्रीम कोर्ट द्वारा 1997 में जारी न्यायपालिका के न्यायिक जीवन के मूल्यों की याद दिलाते। भारत के मुख्य न्यायाधीश का दर्जा देश के नैतिक पायदान पर कहीं अधिक ऊंचा है- उनके हर शब्द का वजन और अर्थ होता है और देश के विमर्श को प्रभावित करता है। उन्हें तो उपदेश देने का शौक रहा है, ऐसे में उनका फर्ज था कि वे न्यायाधीशों के आचरण के लिए तय नैतिक सीमाओं को दोहराते। ऐसा न करके, वे अपने कार्यकाल के दौरान न्यायपालिका के पतन में स्वयं भागीदार बन गए हैं। वैसे उन्होंने कुछ ऐसे फैसले भी दिए हैं जिनकी तारीफ होनी चाहिए। मसलन, समलैंगिकता के अपराधीकरण को निरस्त करना या ट्रांसजैंडर के अधिकारों की बहाली आदि। लेकिन एक असली जज की असली परीक्षा तब होती है जब वह सरकार की मनमानी के खिलाफ खड़ा होता है, और इस मोर्चे पर उनके फैसले बहुत अधिक नहीं दिखते। काफी कोशिश करने पर भी ऐसे फैसले याद नहीं आते। बहुत से ऐसे मामलों पर काफी समय खर्च किया गया जिसमें अदालत का कुछ लेना-देना नहीं था, जैसेकि किसानों का आंदोलन या कोलकाता के आर जी कर मेडिकल कॉलेज का मामला। ये दोनों ऐसे मामले हैं जिनमें लगा कि अदालत सरकार की तरफ से खड़ी है। दोनों ही केसों में अदालत की छवि को धक्का पहुंचा है। किसानों ने अदालत का सुझाव मानने से इनकार कर दिया था और कोलकाता के डॉक्टरों ने भी काम पर लौटने का सुझाव नहीं माना। शायद किसी को मुख्य न्यायाधीश को लोक प्रशासन के उस पहले नियम की याद दिलानी चाहिए थी - कि अपने प्रभाव क्षेत्र से बाहर अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। और अब जब जस्टिस चंद्रचूड़ रिटायर होने वाले हैं, तो भी वे अपने खोखले प्रतीकात्मक उपदेश देने के शौक को जारी रखेंगे। अभी हाल ही में उन्होंने न्याय की देवी की नई प्रतिमा का उद्घाटन किया है, जिसमें देवी की आंखों पर अब कोई पट्टी नहीं है, यानी कानून अब अंधा नहीं है, और तलवार की जगह अब वह भारतीय संविधान की एक प्रति पकड़े हुए हैं। मुझे इस नाटकीयता से कोई दिक्कत नहीं है, क्योंकि मेरे लिए महात्मा गांधी के तीन बंदर आज भी हमारी न्याय प्रणाली की स्थिति को बेहतर तरीके से दर्शाते हैं-जोकि न देख सकता है, न सुन सकता है और न बोल सकता है। यह लेख किसी उल्लास में नहीं लिखा गया है, बल्कि एक अफसोस और निराशा के साथ लिखा गया है कि क्या कुछ हो सकता था। एक व्यक्ति था, एक न्यायाधीश था, जो विद्वान था, एक सभ्य इंसान था, एक दयालु व्यक्ति था, एक मर्मज्ञ कानूनी कौशल वाला था जो देश को उस दलदल से बाहर निकालने के लिए बहुत कुछ कर सकता था जिसमें उसे धकेला जा रहा है। त्रासदी यह नहीं है कि वह ऐसा करने में विफल रहा, बल्कि यह है कि उसने ऐसा नहीं करने का फैसला किया। काश, उस व्यक्ति ने मदर टेरेसा जैसी पुण्य सेवा के उन आदर्श शब्दों से सीखा होता, जिनकी विरासत पीढ़ियों तक जीवित रहेगी। मदर टेरेसा ने कहा था:

दुनिया आपकी मिसालों से बदलती है, न कि आपकी राय से।
अलविदा योर लॉर्डशिप
आपको शुभकामनाएं

संपादकीय

नये धोखाधड़ी के हथकंडे

इ न दिनों जगह से जगह नये धोखाधड़ी का समाचार मिल रहा है । खुद को सीबीआई अधिकारी बताने वाले एक अंतर्राज्यीय गिरोह ने पद्मभूषण से सम्मानित और वर्धमान समूह के चेयरमैन एसपी ओसवाल से सात करोड़ रुपये की ठगी की थी। उन्हें दो दिनों तक डिजिटल भयचक्रमें रखा गया। उन्हें किसी को फोन करने या संदेश भेजने से रोका गया। इतना ही नहीं जालसाजों ने वीडियो कॉल के जरिये सुप्रीम कोर्ट की फर्जी सुनवाई आयोजित की। कल्पना कीजिए इतने प्रभावशाली व्यक्ति को जब साइबर अपराधियों ने असहाय बना दिया, तो आम आदमी की क्या गति होगी? निस्संदेह, इससे बचने के लिये लोगों को सतर्क रहने की जरूरत है। खासकर उन बुजुर्गों को जो ऑनलाइन व्यवहार के प्रति ज्यादा जागरूक नहीं हैं। हालांकि, साइबर अपराधी नित नये धोखाधड़ी के हथकंडे अपना रहे हैं,लेकिन फिर भी जागरूकता बेहद जरूरी है। साइबर सुरक्षा एजेंसियों को सतर्कता, सजगता व तत्परता से ऐसे अपराधियों पर शिकंजा कसना होगा। नागरिक अनजान लोगों के फोन कॉल, ई-मेल या संदेश के प्रति सचेत रहें। उन्हें धैर्य के साथ सोचना होगा कि जिस कथित काल्पनिक अपराध के लिये उन्हें डराया-धमकाया जा रहा है क्या उससे वास्तव में उनका कोई लेना -देना है? यूं तो भय-आशंका का काल्पनिक चित्रण करके साइबर अपराधी लोगों की सोचने-समझने की क्षमता पर प्रहार करते हैं। लेकिन ध्यान रहे कि कोई कोर्ट या सरकारी एजेंसी तत्काल ऑनलाइन कार्रवाई नहीं करती और न ही पैसे की मांग करती है। भारतीय साइबर सुरक्षा एजेंसियों की आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम को उन तथ्यों से आम लोगों को जागरूक करना चाहिए, जिनके जरिये लोगों के खाते खाली किये जा रहे हैं। लोगों को बताये जा रहे विभागों से सीधे संपर्क करके वस्तुस्थिति का संज्ञान लेना चाहिए। यदि अपराधी भयाक्रांत करते हैं तो घबराना नहीं चाहिए। किसी अपराधी को पैसे ट्रांसफर करने से पहले, इस बारे में परिवार के लोगों, मित्रों व पुलिस को सूचित करना चाहिए। लोगों को अपराधियों के संदेश का स्क्रीन शॉट लेना चाहिए, फोन कॉल रिकॉर्ड आदि सबूत सुरक्षित रखने चाहिए। साथ ही साइबर हेल्पलाइन 1930 पर डायल करें व स्थानीय पुलिस को सूचित करें।

समुद्र-मंथन से अवतरित लक्ष्मी के रूप में समाई प्रकृति

प्रमोद भार्गव

समुद्र-मंथन के दौरान जिस स्थल से कल्पवृक्ष और अप्सराएं मिलीं, उसी के निकट से महालक्ष्मी मिलीं। ये लक्ष्मी अनुपम सुंदरी थीं, इसलिए इन्हें भगवती लक्ष्मी कहा गया है। श्रीमद् भागवत में लिखा है कि ‘अनिंद्य सुंदरी लक्ष्मी ने अपने सौंदर्य, औदार्य, यौवन, रंग, रूप और महिमा से सबका चित्त अपनी ओर खींच लिया।‘ देव-असुर सभी ने गुहार लगाई कि लक्ष्मी हमें मिलें। स्वयं इंद्र अपने हाथों पर उठाकर एक अद्भुत व अनूठा आसन लक्ष्मी को बैठने के लिए ले आए। उनकी कटि बहुत पतली थी। वक्षस्थल परस्पर सटे व उभरे हुए थे। उन पर चंदन और केसर का लेप लगा था। जब वे चलती थीं, तो उनकी पायजेब से मधुर ध्वनि प्रस्फुटित होती थी। ऐसे में ऐसा लगता था, मानो कोई सोने की लता इधर-उधर घूम रही है। इस लक्ष्मी को विष्णु ने अपने पास रख लिया। समुद्र-मंथन में लक्ष्मी मिलीं, इसे हम यूं भी ले सकते हैं कि लक्ष्मी के मायने धन-संपदा या सोने-चांदी की विपुलता से भी होता है। समुद्र-मंथन के क्रम में जब देव-दानव समुद्र पार कर गए तो सबसे पहले हिरण्यकशिपु दैत्य को सोने की खदान मिली थी। इसे हिरकेनिया स्वर्ण-खान आज भी कहा जाता है। इस खदान पर वर्चस्व के लिए भी देव और असुरों में विवाद व संग्राम छिड़ा था। अंततः हिरण्यकषिपु का इस पर अधिकार माना गया, क्योंकि इसे ही यह खान दिखाई दी थी। इसे यूं भी कह सकते हैं, कि इस सोने की खान को खोजने में हिरणयकषिपु की ही प्रमुख भूमिका रही थी। दरअसल लक्ष्मी के विलक्षण रूप का वर्णन प्रकृति के रहस्यों से भी जुड़े हैं। वैसे तो देवी लक्ष्मी के अनेक रूप हैं, परंतु उनका सर्वाधिक प्रचलित रूप वह है, जिसमें देवी पूर्ण रूप से खिले हुए पद्म-प्रसून पर अविचल मुद्रा में बैठी हुई हैं। उनके दोनों हाथों में नालयुक्त कमल हैं। साथ ही उनके दोनों तरफ कमल-पुष्प पर ही दो हाथी अपनी ऊपर उठाई सूंडों में घड़े लिए हुए लक्ष्मी का जल से अभिशेक कर

रहे हैं। लक्ष्मी के इस रूप और इससे भिन्न रूपों का कौतुक-वृत्तांत रामायण से लेकर अधिकांष पुराणों में अंकित है। इन लक्ष्मी का जलाभिषेक करते गजों से घनिष्ठ संबंध है। जब देवों ने असुरों के साथ मिलकर सागर-मंथन किया तो उसमें से चौदह प्रकार के रत्नों की प्राप्ती हुई। इन्हीं रत्नों में ऐरावत नाम का हाथी और लक्ष्मी भी थीं। समुद्र-मंथन से उत्पन्न होने के कारण लक्ष्मी और गज का जन्मजात संबंध स्वाभाविक है। लक्ष्मी को पृथ्वी के प्रतीक के रूप में भी माना गया है। इस नाते उन्हें भूदेवी भी कहा जाता है। वैसे भी विष्णु की दो पत्नियां थीं। एक लक्ष्मी और दूसरी पत्नी श्रीदेवी हैं। यजुर्देव में कहा भी गया है,
श्रीष्च ने लक्ष्मी श्रीश्च पतन्यो।
भूदेवी होने के कारण लक्ष्मी पृथ्वी की प्रतीक हैं। इस नाते गज जलद अर्थात मेघों के प्रतीक हैं। इसीलिए वर्षा पूर्व बादलों के गरजने की क्रिया को मेघ-गर्जना कहा जाता है। जब तक धरती पर बादल बरसते नहीं हैं, तब तक फसलों के रूप में अन्न-धान्य पैदा नहीं होते हैं। लक्ष्मी का जल से अभिषेक करते गजों का प्रतीक भी यही है कि गज बरसकर पृथ्वी को अभिसिंचित कर रहे हैं, जिससे पृथ्वी से सृजन संभव हो सके। इस कारण लक्ष्मी को सृजन की देवी भी कहा जाता है। सौभाग्य लक्ष्मी को उपनिषद में ‘सकल भुवन माता‘ कहा गया है। सृजन अर्थात सृष्टि माता-पिता दोनों के संसर्ग से संभव है। अस्तु लक्ष्मी मातृशक्ति की और गज पितृषक्ति के प्रतीक हैं। गज को पुरुषार्थ का प्रतीक भी माना गया है। गोया, लक्ष्मी और गगन के समतुल्य गज संसार के माता-पिता माने जा सकते हैं। गज दिषाओं के प्रतीक भी हैं, इसलिए इन्हें दिग्गज भी कहा जाता है। इस कारण वे राज्य की चतुर्दिक सीमाओं के भी प्रतीक हैं। वैसे भी पुरातन काल में जो चतुरंगी सेनाएं हुआ करती थीं, उनमें गज-सेना भी होती थी, जो सीमांत प्रांतरों में चारों दिशाओं में तैनात रहती थी। कमल पर आरूढ़ लक्ष्मी से कमल का गहरा व आत्मीय रिष्ता है। सृष्टि के कर्ता ब्रह्मा स्वयं कमलभव हैं, जो भगवान विष्णु की नाभि से प्रस्फुटित कमल पर ही विराजमान हैं। इसी कारण विष्णु को ‘पद्मनाभ‘ और ‘पद्माक्षी‘ कहा गया है। कमल पर बैठी होने के कारण लक्ष्मी को ‘कमला‘ भी कहा जाता है। कमल की यह विषेशता है कि वह कीचड़ में पैदा होने के पष्चात भी स्वच्छ है, स्वछंद है एवं निर्मल है। जल में जीवन-यापन करते हुए भी वह निर्लिप्त है। अनेक पांखुरियों से युक्त व खिला होते हुए भी वह एकात्मता का द्योतक है। कमल की जड़, नाल, पंखुड़ियां व बीज सब मानव उपयोगी हैं, इसलिए कमल को समश्टिगत गुणों वाले पुश्पों में सर्वश्रेश्ठ माना जाता है। व्यश्टि में समश्टि का समन्वयात्मक संदेष देता हुआ कमल लोकमंगल का आवाहन कराता है, इसलिए ऋशि-मुनियों ने कमल को सांस्कृतिक प्रधानता व सर्वोच्चता की पहचान से निरुपित किया है। लक्ष्मी का जल से अभिशेक करते हुए कलष, पूर्ण-कलष अर्थात लोक मंगलकारी कलषों के प्रतीक हैं। जल जीवन का आरंभिक उद्गम स्थल होने के साथ, जीवन का प्रमुख आधार भी है। जल से ही पद्म उत्पन्न हुआ है और पद्म से ब्रह्मा और ब्रह्मा से संपूर्ण सृश्टि। इसी कारण कलश को हिरण्यगर्भ की संज्ञा से विभूषित किया गया है। कलश के संदर्भ में सांस्कृतिक मान्यता है कि इसमें त्रिदेव अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास है। कलश के मुख पर ब्रह्मा, ग्रीवा में शिव और मूल में विष्णु तथा मध्य में मातृगणों का निवास होता है। अर्थात ये सभी देव-गण कलष में प्रतिष्ठित होकर किसी मांगलिक कार्य को सकारात्मक गति देने का काम करते हैं। इस कारण कलष भी लक्ष्मी के समान ही सृष्टि और महाशक्ति का प्रतीक माना गया है। मूर्ख और अशुभ का प्रतीक माने जाने के बावजूद उल्लू धन की देवी भगवती का वाहन है। हालांकि ऋग्वेद के श्री-सूक्त में वैभव की देवी लक्ष्मी की विस्तार से चर्चा है, लेकिन इस वृत्तांत में उल्लू को लक्ष्मी के वाहन के रूप में कहीं नहीं दर्शाया गया है। समुद्र-मंथन से लक्ष्मी तो प्रकट हुईं, लेकिन उल्लू के प्रकट होने का विवरण नहीं है। कहते हैं कि जब लक्ष्मी को धन की देवी के रूप में प्रतिष्ठा मिल गई, तो उनकी स्थान-स्थान पर पूजा होने लग गई। इस कारण उन्हें अलग वाहन की आवष्यकता अनुभव होने लगी। उन्हें भगवान विष्णु के व्यस्त रहने के कारण भी अपने उपासकों के पास जाने में विलंब होने लगा। ऐसे में लक्ष्मी के लिए ऐसे वाहन की खोज षुरू हुई, जो विष्णु के वाहन गरुड़ की तुलना में उड़ान भरने में दक्ष तो हो ही, रात में भी उड़ान भरने में समर्थ हो। क्योंकि लक्ष्मी के भक्त धन-वैभव की पूजा रात्रिकाल में ही दीपों की रोशनी में करते हैं। अब हम सब जानते ही हैं कि जीव-जगत के अधिकांश प्राणी रात में आहार-भक्षण के बाद निद्रा में लीन हो जाते हैं। केवल उल्लू ही रात में जागता है और आहार के लिए शिकार को भटकता है। गोया, निषाचर उल्लू रात में विचरण करने के कारण लक्ष्मी के वाहन के रूप में उपयुक्त ठहरा दिए गए और उल्लू लक्ष्मी के वाहन के रूप में उपयोग में आने लग गए। इन वृत्तांतों से भगवती लक्ष्मी के प्रकृति से जुड़े रूप का स्पश्ट आभास होता है।

गदर 2' फेम अनिल शर्मा की नई फिल्म 'वनवास' का टीजर रिलीज देख फैंस भावुक

संगीता तोमर

'गदर 2' फेम अनिल शर्मा की नई फिल्म 'वनवास' का टीजर रिलीज कर दिया गया, जिसे काफी पसंद किया जा रहा है। फिल्म में नाना पाटेकर और अनिल शर्मा के बेटे उत्कर्ष शर्मा हैं। यह 20 दिसंबर को रिलीज होगी। 'गदर 2' जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्म के बाद अनिल शर्मा अब नई फिल्म 'वनवास' लेकर आए हैं, जिसका कुछ समय पहले ही ऐलान किया गया था। अब इस फिल्म का टीजर रिलीज कर दिया गया है। नाना पाटेकर स्टारर इस फिल्म में अनिल शर्मा के बेटे और एक्टर उत्कर्ष शर्मा भी हैं। उत्कर्ष 'गदर' और 'गदर 2' में तारा सिंह के बेटे जीते के रोल में थे। फिल्म की की रिलीज डेट भी सामने आई है। मेकर्स का कहना है कि कुछ कहानियां ऐसी होती हैं, जो हमें अपनों के करीब ले जाती हैं। 'वनवास' की कहानी ऐसी ही है। 'वनवास' के टीजर में नाना पाटेकर की एंट्री होती है। वह बर्फ से घिरे पहाड़ों के बीच चल रहे हैं। साथ में उनका वॉइसओवर है, जिसमें कह रहे हैं, 'पिता

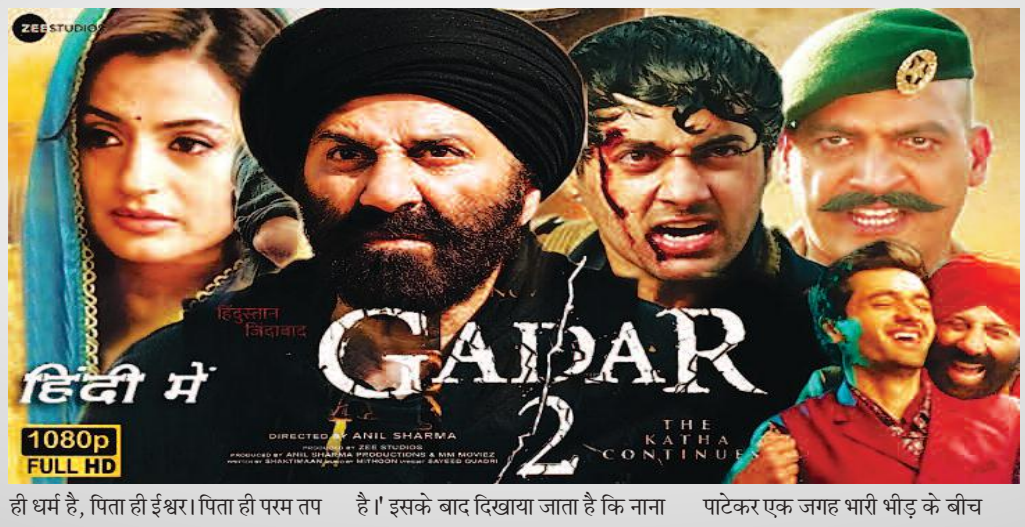

ही धर्म है, पिता ही ईश्वर। पिता ही परम तप है।' इसके बाद दिखाया जाता है कि नाना पाटेकर एक जगह भारी भीड़ के बीच फंस जाते हैं, और फिर आंखों में आंसू लिए एकटक उदासी से देखते रहते हैं। सीन कट होता है और फिर उत्कर्ष शर्मा नजर आते हैं, जो हाथ जोड़े खड़े हैं। अगले सीन में नाना पाटेकर हैं, जो बेटे को सुना रहे हैं, 'पूरी जिंदगी दी बाप ने। डेढ़ बित्ते के थे, जब पैदा हुए। उसी वक्त फेंक देता कूड़े के ढेर में तो? 'वनवास' का टीजर फैंस का दिल छू गया है और वो इसकी तारीफ कर रहे हैं। एक फैन ने लिखा है, 'अनिल साहब इस बार कुछ हटकर लेकर आ रहे हैं।' एक और फैन ने लिखा, 'एक बार फिर बॉक्स ऑफिस पर धमाका होगा।' एक और कमेंट है, 'यार इमोशनल कर दिया।' फिल्म की रिलीज डेट की बात करें, तो यह 20 दिसंबर को रिलीज होगी।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक , प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई -37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

संक्षिप्त समाचार

सड़क दुर्घटना में पत्नी की मौत, पति जख्मी

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद / जिले के फेसर थाना क्षेत्र में अज्ञात पिकअप वैन की टक्कर से स्कूटी सवार दंपत्ति जख्मी हो गए जिसमें इलाज के दौरान पत्नी की मौत हो गई। वहीं जख्मी पति का एक निजी अस्पताल में इलाज करवाया गया। घटना फेसर थाना क्षेत्र के देवरियां गांव के समीप की हैं। मृतका की पहचान थाना क्षेत्र के बगइया गांव निवासी अरुण कुमार की 30 वर्षीय पत्नी पूजा कुमारी के रूप में की गई है। जानकारी के मुताबिक मृतिका इंदौर से जीएनएम की पढाई कर रही थी। सोमवार की शाम वह प्रायोगिक परीक्षा से संबंधित खरीदारी को लेकर स्टेशनरी दुकान अपने पति के साथ जिला मुख्यालय औरंगाबाद जा रही थीं तभी उस जगह एक अनियंत्रित पिकअप वैन ने स्कूटी सवार दंपत्ति को टक्कर मार दी जिसमें दोनों जख्मी हो गए। इसके बाद स्थानीय लोगों की मदद से महिला को सदर अस्पताल ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। वहीं इस घटना में जख्मी उसके पति का इलाज एक निजी अस्पताल में किया गया। इधर घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सौंप दिया गया। मृतका के दो बेटे 12 वर्षीय तेजस्वी और 10 वर्षीय विराट हैं। इस घटना से परिजनों में शोक व्याप्त है। सूचना पर पहुंचे जिला पार्षद अनिल यादव, राजद प्रवक्ता डॉ रमेश यादव एवं पोखराहा पंचायत मुखिया प्रतिनिधि अभिषेक कुमार सहित अन्य ने मृतका के पीड़ित परिजनों से मुलाकात की और इस दुःख की घड़ी में ढांढस बंधाया। उन्होंने जिला प्रशासन से मुआवजे की मांग की हैं।

आहर से मिला शव, जांच में जुटी पुलिस

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद/ जिले के दाउदनगर में आहर से एक व्यक्ति का शव मिलने से आसपास सनसनी फैल गई जिसमें दाउदनगर पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। मामला थाना क्षेत्र अंतर्गत बिरई गांव के आहर की हैं। प्रथम दृष्टया से ऐसा प्रतीत होता है कि उस व्यक्ति को गोली मार कर हत्या कर दी गई है और शव यहां आहर में फेक दिया गया है। मृतक की पहचान थाना क्षेत्र के चौरी गांव निवासी विकास चौधरी के रूप में की गई है। दाउदनगर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी कुमार ऋषि राज ने बताया कि एक व्यक्ति का शव बरामद किया गया है। मामले में एफएसएल टीम का गठन किया गया है और जांच पड़ताल की जा रही हैं, प्रथम दृष्टया के अनुसार व्यक्ति को गोली लगने से मौत हुई है।

सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत, लोगों ने की सड़क जाम

रिपोर्ट- निशांत कुमार

औरंगाबाद / हसपुरा प्रखंड के पचरुखिया - गया पथ पर कोइलवां मोड़ के पास मोटरसाइकिल से दुर्घटनाग्रस्त होने की वजह से एक व्यक्ति की मौत होने का समाचार है। बताया जाता है कि मृतक रामस्वरूप वर्मा रफीगंज प्रखंड के सिमरा ग्राम के रहने वाले थें,जो मोटरसाइकिल से कोइलवां की तरफ पचरुखिया मोड़ की तरफ आ रहे थें । मोटरसाइकिल उनका भतीजा चला रहा था। कोइलवां मोड़ पर जैसे हीं उनकी मोटरसाइकिल मुड़ी,वैसे हीं देवहरा की तरफ से तेज रफ्तार से मोटरसाइकिल सवार ने इतने जोर से धक्का मारा कि पीछे बैठे रामस्वरूप वर्मा मोटरसाइकिल से सड़क पर फेंका गए जिसकी वजह से उनका सिर फट गया । फलस्वरुप देखते हीं देखते उनकी घटनास्थल पर हीं मौत हो गई। फिर उनकी लाश पचरुखिया मोड़ लाई गई, जहाँ आक्रोशित भीड़ ने सड़क जाम कर दिया और मुआवजे की मांग करने लगी। सूचना हसपुरा की पुलिस आई । समाचार लिखे जाने तक जाम नहीं हटा है ।

वेलफेयर बिल्डिंग इस्टेट प्रा लिमिटेड ने लौटाई जामा राशि

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद/ जिला उपभोक्ता अदालत के माध्यम से आज एक वेलफेयर बिल्डिंग इस्टेट प्रा लिमिटेड में पांच साल में दोगुना राशि के झांसे में आई हुई कोशल्या देवी इमामबाड़ा ओबरा को कुल जामा मूलधन राशि लोटा दी गई है और राशि प्राप्ति के लिए वाद चल रही है, अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि शिकायत वाद संख्या -03/22 के सुचक कोशल्या देवी ने मार्च 2022 में वेलफेयर बिल्डिंग प्रा लिमिटेड के प्रधान कार्यालय, शाखा कार्यालय और इंचार्ज पर केस की थी जिसमें आज वेलफेयर बिल्डिंग कम्पनी ने जिला उपभोक्ता अदालत के सदस्य बद्रीनारायण सिंह, बचाव पक्ष के अधिवक्ता जगनरायण सिंह के उपस्थित में कोशल्या देवी को नबे हजार का चेक प्रदान किया इससे पूर्व 2लाख50 हजार रुपए कम्पनी द्वारा सूचक को लोटाई गई है, सूचक ने नो लाख अस्सी हजार रुपए के लिए जिला उपभोक्ता अदालत में वाद प्रस्तुत किया है।

जयंती पर स्वर्गीय कार्तिक उरांव को श्रद्धांजलि

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

झारखंड प्रदेश कांग्रेस सेवादल के प्रदेश उपाध्यक्ष अजय कुमार ने जयंती पर स्वर्गीय कार्तिक उरांव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे सफल अभियंता और राजनेता के साथ-साथ झारखंड आंदोलन के सूत्रधार भी थे। उन्होंने आदिवासियों को आदिवासी विकास परिषद के माध्यम से एकजुट होकर राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया। छोटानागपुर क्षेत्र के काला हीरा कहलाने वाले कार्तिक उरांव पहले ऐसे राजनेता थे जिनके पास इंजीनियरिंग की डिग्री थी। आदिवासी समाज का विकास कार्तिक उरांव का सपना था। आदिवासियों की धर्म, संस्कृति और जमीन की रक्षा के लिए समाज को शिक्षित और संगठित करना उनका लक्ष्य, उनकी सोच व उनका सपना था। राष्ट्रीय विचारधारा के प्रतीक स्वर्गीय कार्तिक उरांव आदिवासियों को आम लोगों के हितों के लिए जीवन के अंतिम क्षणों तक संघर्ष करते रहे।

कोइलवा गाँव के मध्य विद्यालय में हुई शिक्षिका की पिटाई,ग्रामीण हुयें आक्रोश

ग्रामीणों ने जातिगत भेदभाव, अभद्रता का भी लगाया आरोप

राजू भारती, हसपुरा / औरंगाबाद

हसपुरा प्रखंड के कोइलवा गाँव के मध्य विद्यालय में एक चौंकाने वाली घटना घटी है । एक प्रखण्ड शिक्षिका द्वारा बीपीएससी शिक्षिका को बेरहमी से पिटाई करने का आरोप लगाया गया हैं । सूचना पर पहुँचे पीड़ित शिक्षिका के परिजनों ने उन्हें इलाज कराने को लेकर सामुदायिक स्वाथ्य केंद्र हसपुरा पहुंचाया,जहाँ के चिकित्सकों ने प्रारम्भिक इलाज के बाद बेहतर इलाज कराने को लेकर सदर अस्पताल औरंगाबाद रेफर कर दिया हैं । घटना सोमवार की दोपहर की हीं बताई जा रही हैं । इस घटना की लिखित शिकायत हसपुरा थाना में पीड़िता के द्वारा दिया गया, लेकिन दूसरे दिन तक कोई कार्यवाई नहीं हुई तो ग्रामीणों ने विद्यालय में पहुंचकर बच्चो के साथ प्रदर्शन किया । प्रदर्शन की सूचना मिलते हीं हसपुरा प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रदीप कुमार चौधरी घटनास्थल पर पहुंचे और ग्रामीणों से वातार्लाप कर उचित कार्यवाई का भरोषा देते हुए ग्रामीणों को शांत कराया । प्रदर्शन कर रहे छात्र शशिकांत कुमार,दीपू कुमार,अंकित कुमार, हरिओम कुमार,गीतांजलि कुमारी,निक्की कुमारी,प्रिया कुमारी,श्वेता कुमारी,नेहा कुमारी,सुधा कुमारी,मनीषा कुमारी,सोनाली कुमारी,अस्मिता कुमारी,अराधना कुमारी,खुशी कुमारी,छाया कुमारी के साथ सैकड़ो ग्रामीणों का कहना था कि जब तक इस विद्यालय में प्रधानाध्यापक जितेंद्र शर्मा,कुमकुम कुमारी,उमावती कुमारी एवं वहीं पर हाई स्कूल में पदस्थापित शिक्षक उपेंद्र कुमार इस विद्यालय में रहेंगे तब तक यह विद्यालय राजनीति का अखाड़ा बना रहेगा और हमेशा शिक्षक - शिक्षकों में मारपीट होती रहेगी । बच्चों ने कहा कि प्रधानाध्यापक के साथ यह चारों शिक्षक कार्यालय में बैठकर टाइम पास करते रहते हैं । वहीं बच्चों ने कहा कि जब से इस विद्यालय में बीपीएससी शिक्षिका पुष्पांजलि कुमारी आई हैं,तब से इस विद्यालय में उनके द्वारा हम लोग को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिया जा रहा है । कहा की वो पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ अपनी ड्यूटी निभाती हैं। बच्चों ने यह भी आरोप लगाया की पुष्पांजलि मैम को उमावती मैम हमेशा मारपीट व दुर्व्यवहार करती रहती हैं । यहाँ तक की उमावती कुमारी के पति भी विद्यालय में पहुंचकर पुष्पांजलि मैम को भद्दी भद्दी गालियां देकर चले जाते हैं । कई बार शिकायत करने के बावजूद भी आज तक कोई कार्यवाई नही हुई हैं। ग्रामीणों ने बीडीओ के समक्ष कहा की यदि प्रधानाध्यापक जितेंद्र सहित इन चारों शिक्षकों को सस्पेंड नही किया जाएगा,तो हम लोग विद्यालय में तालाबंदी कर कार्रवाई की मांग करेंगे । ग्रामीणों ने हाई स्कूल के शिक्षक उपेंद्र के ऊपर भी गर्मी आरोप लगाए । दोनों आरोपित शिक्षिका के ऊपर जातिवाद भेदभाव करने का भी गंभीर आरोप लगाया गया । बीडीओ प्रदीप कुमार चौधरी ने ग्रामीणों को समझा-बुझाकर मामला शांत कराया। उन्होंने ग्रामीणों से वातार्लाप कर कहा की जो भी शिक्षक दोषी पाये जाएंगे,उन पर विधि संवत कार्रवाई की जाएगी । उन्होंने कहा की जो भी शिक्षक बच्चों के बीच जाति का भेदभाव रखते हैं, उन पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी । बीपीएससी शिक्षिका के साथ हुई मारपीट पर उन्होंने पीड़ित शिक्षिका के भाई को उचित न्याय का भरोषा दिया, इधर प्रधानाध्यापक जितेंद्र ने भी कहा कि जनवरी से चल रही है अनबन, प्रधानाध्यापक जितेंद्र शर्मा ने बताया कि जनवरी से अब तक विद्यालय में अक्सर शिक्षकों के बीच मारपीट होती रहती है। छात्र-छात्राओं ने आरोप लगाया कि शिक्षिका कुमकुम और उमावती जाति के आधार पर बच्चों से दुर्व्यवहार करती हैं । उस पर उन्होंने कहा की इसको लेकर कई बार हम डाट फटकार लगाए हैं। उन्होंने कहा की अगर फिलहाल ऐसा हो रहा हैं तो उच्च अधिकारी को करवाई के लिए लिखा जाएगा । वहीं शिक्षिका उमावती कुमारी ने बताया कि गुट बाजी को लेकर विवाद हुई थी । हम दोनों के बीच मारपीट भी हुई है । हमारे शरीर में भी दर्द है । वहीं उनके पति की आने की बात पर उन्होंने कहा कि हमें विद्यालय तक छोड़ने वो प्रत्येक दिन आते हैं ' आरोप बेबुनियाद हैं, डीइओ ने कहा की जाँच कर होगी उचित कार्रवाई जिला शिक्षा पदाधिकारी ने कहा की जाँच कर उचित कार्रवाई की जायेगी । उन्होंने कहा की अगर बीपीएससी शिक्षिका की पिटाई हुई है तो जांच करा कर दोषियों के ऊपर विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

महागठबंधन की बैठक संपन्न सुभाष को जीताने का लिया संकल्प

कोडरमा -विजय यादव

कोडरमा विधानसभा महागठबंधन प्रत्याशी सुभाष यादव की जीत सुनिश्चित करने को लेकर झुमरी तिलैया स्थित सुभाष यादव के आवास के समक्ष इंडिया महागठबंधन की बैठक आयोजित की गई बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष सह जिला परिषद अध्यक्ष रामधन यादव ने किया जबकि संचालन रविंद्र शांडिल्य पूर्व प्रत्याशी विधानसभा कोडरमा झामुमो ने किया बैठक में महागठबंधन के प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित को लेकर रणनीति बनाई गई इस अवसर पर सुभाष यादव की धर्मपत्नी लालती देवी भाई अशोक यादव पुत्र नीतीश यादव ने सुभाष यादव को जीत दिलाने की अपील की बैठक को संबोधित करते हुए रामधन यादव ने कहा कि सुभाष यादव एक जिंदादिल इंसान है गरीबों के मसीहा के रूप में उभरता हुआ व्यक्तित्व है इन्हें हम सबों को जिताने के लिए जनता के बीच जाना है वहीं रविंद्र शांडिल्य ने अपने संबोधन में कहा कि हेमंत सरकार में किए गए कल्याणकारी कार्यों को हम सबों को जनता के बीच प्रचारित करने की आवश्यकता है और यही प्रचार प्रत्याशी की जीत का सूत्रधार है साथ ही सुभाष यादव की व्यक्तित्व मतदाताओं को आकर्षित करेगी जिलाध्यक्ष वीरेंद्र पांडेय ने कहा कि महागठबंधन की जीत को लेकर कोडरमा में हवा बह चुकी है कांग्रेस जिला समिति के अध्यक्ष भागीरथ पासवान ने कहा कि सुभाष यादव की जीत ही हम सबों की जीत है बैठक को रामबचन यादव संजय पांडेय झामुमो महेश यादव मोहम्मद मुबारक मोहम्मद अनवारूल हक संजय कुमार साजन रघुनाथ दास मनोज रजक विजय यादव घनश्याम तुरी दीपक विश्वकर्मा निर्मला तिवारी मंजू देवी बेबी देवी मेनकी देवी राजू सिंह प्रदीप सिंह प्रभात राम अर्चना सिंह श्रवन सिंह गणेश स्वर्णकार विजय यादव दामोदर यादव जिला अध्यक्ष आम आदमी पार्टी प्रेम प्रकाश वामदल कन्हैया यादव महेश यादव सीमा पंडित शंकर यादव बहादुर यादव आशीष पांडे मंटू यादव भी यादव मोहम्मद साजिद दिलीप चंद्रवंशी आदि दर्जनों नेताओं ने बैठक को संबोधित किया। इस अवसर पर महागठबंधन के सैकड़ो कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे

रांची में ब्रिटिश डेप्युटी हाई कमिश्नर ने C.R.Y. चाइल्ड एक्टिविटी सेंटर का दौरा किया

रांची उत्कर्ष तिवारी

ब्रिटिश डेप्युटी हाई कमिश्नर डॉक्टर एंड्रयू फ्लेमिंग ने बीते मंगलवार को उ.फ. (चाइल्ड राइट्स एंड यू) द्वारा संचालित चाइल्ड एक्टिविटी सेंटर, कड़रूपुल टोली, रांची का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने बच्चों के साथ बातचीत की और उनके अनुभवों को साझा किया।डॉक्टर एंड्रयू फ्लेमिंग ने पहले भी बच्चों से वादा किया था कि वह उन्हें भारत-इंग्लैंड क्रिकेट मैच के दौरान इंग्लैंड क्रिकेट टीम से मिलाएंगे। उन्होंने अपना वादा पूरा किया और बच्चों को इंग्लैंड क्रिकेट टीम से मिलाया। दौरे में डॉक्टर एंड्रयू फ्लेमिंग ने बच्चों के साथ गाना गाया और झूमे। उन्होंने बच्चों में हुए सुधार और उनके अनुभवों को जानने के लिए बातचीत की। उन्होंने रांची विजिट के दौरान फिर से बच्चों से मिलने की इच्छा जताई। इस अवसर पर उ.फ. के मैनेजर सव्यसाची चटर्जी, प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर अविनाश कुमार दुबे, और शिक्षक अंकिता कुमारी नायक और सनी कुमार राम उपस्थित रहे।

निर्दलीय प्रत्याशी हर्ष अजमेरा ने की समाजसेवी मंजीत यादव की हत्या की कड़ी निंदा

हजारीबाग-

युवा नेता सह निर्दलीय प्रत्याशी हर्ष अजमेरा ने समाजसेवी मंजीत यादव की निर्मम हत्या की कड़ी निंदा की है। उन्होंने इस घटना को समाज के लिए एक बड़ी क्षति करार देते हुए कहा कि मंजीत यादव न केवल समाज सेवा में समर्पित थे, बल्कि रामनवमी महासमिति के पूर्व अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने अमूल्य योगदान दिया। मंजीत यादव ने वर्ष 2008 से 2011 तक चार वर्षों तक महासमिति का नेतृत्व किया, जिसमें उन्होंने समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हर्ष अजमेरा ने इस दुखद घटना पर गहरा शोक प्रकट किया है, उन्होंने कहा, मंजीत यादव जैसे समर्पित समाजसेवियों की हत्या न केवल उनके परिवार के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए एक बड़ा आघात है। उनका समाज सेवा में योगदान अमूल्य था, और उनकी अनुपस्थिति एक खालीपन छोड़ गई है जिसे भरना कठिन होगा। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि इस हत्या की निष्पक्ष और त्वरित जांच हो ताकि दोषियों को कठोरतम सजा दी जा सके और समाज में ऐसा संदेश जाए कि अपराधियों को बख्शा नहीं जाएगा। अजमेरा ने यह भी बताया कि ऐसे समय में समाज के सभी वर्गों को एकजुट होकर काम करना चाहिए ताकि पीड़ित परिवार को न्याय मिल सके और समाज में अपराध को जड़ से समाप्त करने की दिशा में कदम बढ़ाए जा सकें।

निर्दलीय प्रत्याशी सुरेन्द्र भाई मोदी ने प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न गांवों में भ्रमण कर लोगों से मांगा आशीर्वाद

संवाददाता बरकट्ठा

बरकट्ठा। बरकट्ठा विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी सुरेंद्र भाई मोदी ने प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न गांवों में जनसंपर्क अभियान चलाकर मतदाताओं से आशीर्वाद मांगा। उन्होंने प्रखंड क्षेत्र के ग्राम छुतहरी कटिया, बरकंनगांगों, चुगलामो, तुर्कबाद, केन्दुआ, बनपुरा, घसकोडीह, गैंडा, बसरामो एवं डुमरीया टांड़ में अपने समर्थकों के साथ जाकर मतदाताओं से अपने पक्ष वोट देने कि अपील किया।दिकर आशीर्वाद मांगा। सुरेंद्र मोदी ने कहा कि इस बार क्षेत्र की जनता बदलाव चाहती है और विकास को प्राथमिकता देने वाले नेतृत्व का समर्थन कर रही है। सुरेंद्र मोदी ने अपने विकास एजेंडे को जनता के सामने रखा और कहा कि यदि उन्हें जनता का समर्थन और आशीर्वाद मिलता है तो वे क्षेत्र के हर प्रखंड में एक डिग्री कॉलेज की स्थापना सुनिश्चित करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने प्रत्येक प्रखंड के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को सदर अस्पताल के स्तर का बनाने की बात कही, ताकि लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। सुरेंद्र मोदी ने सूर्यकुंड को आस्था का केंद्र मानते हुए इसे एक प्रमुख पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है, जिससे क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिल सके और स्थानीय लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलें। जनसंपर्क अभियान में भगवानी सिंह, मणिलाल मंडल, इजरायल खान, श्यामसुंदर सिंह, बीरेंद्र मोदी, प्रमिला बर्नवाल, ईश्वर मोदी, सुनील कुमार, सकलदेव बर्नवाल, रामदेव मंडल, रंजीत सिंह, नईम खान समेत अन्य लोग शामिल थे।

डीआईजी के निर्देश पर गठित टीम ने अवैध मवेशी लदा तीन ट्रक को पकड़ा. चालक को जेल

संवाददाता बरकट्ठा

बरकट्ठा। बरकट्ठा पुलिस ने अवैध मवेशी लदा तीन ट्रक को पकड़ा है। डीआईजी हजारीबाग के निर्देश पर टीम गठीत कर कार्रवाई किया गया। बरकट्ठा थाना प्रभारी राजेश कुमार भोक्ता ने टीम के साथ मिलकर थाना के समीप जांच अभियान चलाया। इस दौरान बरही की ओर से आ रही अवैध पशु लदा ट्रक नंबर डब्ल्यूबी 11 डी 6995, यूपी 61 बीटी 7012, डब्ल्यूबी 11 डी 2265 को पकड़ा। तीनों ट्रकों की जांच करने पर चालक और व्यापारी के द्वारा किसी तरह का वैध कागजात नहीं दिया गया। पकड़े गए ट्रक चालकों ने बताया कि सभी पशु बिहार से बंगाल ले जाया जा रहा है. तीनों ट्रकों में 54 भैंस लदा था जिसकी देखभाल के लिए हजारीबाग गौशाला भेज दिया गया।

Format C-7

Information regarding individuals with pending criminal cases, who have been selected as candidates, along with the reasons for such selection, as also as to why other individuals without criminal antecedents could not be selected as candidates

(As per the Commission's directions issued in pursuance of the Order dated 13.02.2020 of the Hon'ble Supreme Court in contempt petition(C) no. 2192 of 2018 in WP(C) no. 536 of 2011)

Name of Political Party	:	**BAHUJAN SAMAJ PARTY**
Name of the Election	:	**Legislative Assembly General Election 2024**
Name of State/UT	:	**JHARKHAND PHASE-2**
Name of the Constituency	:	**23 - RAMGARH**
Name of the Candidate	:	**BINU KUMAR MAHATO**

Sl.No.			
1.	Criminal antecedents		
	a.	Nature of the offences	Section 354(A) 354(D), 504, 506 of IPC And Section 66 (E) of I T Act
	b.	Case No.	Case No GR 729/2020
	c.	Name of the Court	J M Ist RAMGARH
	d.	Whether charges have been framed or not (Yes/No)	YES
	e.	Date of conviction, if any	NIL
	f.	Details of punishment undergone, if any	NIL
	g.	Any other information required to be given	NIL
2.	The reasons for the selection of the candidate. Selection shall be with reference to the qualifications, achievements and merit of the candidate, and not mere "winnability" at the polls (not more than 100 words)		In comparison to the other candidates and their history, it was found to be suitable being the candidate has stated that false FIR has been lodged against him
3.	Reasons as to why other individuals without criminal antecedents could not be selected as candidates (not more than 100 words)		The offences are to be based on political Vendetta. His image supported by the local office bearers of the party as clean and good.

--- sd ---

Signature of office bearer of the Political Party

Name and designation : Sridhar (National Treasurer)

आईएएस अधिकारी विपिन कुमार ने एएआई के अध्यक्ष का पदभार संभाला

एजेंसी

नई दिल्ली। बिहार कैडर के 1996 बैच के आईएएस अधिकारी विपिन कुमार ने भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) के अध्यक्ष का पदभार संभाल लिया। एएआई ने आज सोशल मीडिया एक्स पर आज यह जानकारी साझा की। एएआई के मुताबिक विपिन कुमार इससे पहले शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग में अतिरिक्त सचिव थे। बिहार में अपनी तैनाती के दौरान उन्होंने राज्य के कई जिलों में जिला मजिस्ट्रेट के रूप में काम किया। वह बिहार पुल निर्माण निगम के अध्यक्ष, बिहार दुग्ध सहकारी संघ (सुधा) के प्रबंध निदेशक और मिड-डे स्कीम-बिहार के निदेशक भी रहे। विपिन कुमार के पास इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार इंजीनियरिंग की डिग्री है।

हरियाणा के कारण प्रदूषित हो रहा दिल्ली का हवा-पानी : विनय मिश्रा

एजेंसी

नई दिल्ली। 'आप' विधायक विनय मिश्रा ने औपचारिक रूप से दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष का पद संभाल लिया।उन्होंने अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में दिल्लीवासियों को स्वच्छ और मुफ्त पानी उपलब्ध कराने का भरोसा दिलाया। विनय मिश्रा ने कहा कि भाजपा ने अपनी गंदी राजनीति के चलते दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) को एक साल से अपंग बना दिया था, पानी की सप्लाई और सीवर की सफाई के काम ठप थे। केजरीवाल के दिशा-निर्देश में जल बोर्ड फिर पटरी पर लौटेगा। उन्होंने कहा, ÷हम दिल्लीवासियों की पानी और सीवर की समस्या को जल्द हल कर देंगे। छठ पूजा हमारे लिए एक बहुत बड़ा आयोजन है। आप सरकार हर साल की तरह इस बार भी यमुना नदी पर छठ पूजा के अच्छे इंतजाम करेगी। हरियाणा में जलने वाली पराली और वहां से यमुना में छोड़े जाने वाले औद्योगिक कचरे की वजह से दिल्ली में वायु और जल प्रदूषण हो रहा है। मैंने मुख्यमंत्री आतिशी से अपील की है कि वह हरियाणा सरकार से बात करके वहां से आ रहे औद्योगिक कचरे को रुकवाएं ताकि हम दिल्ली वालों को साफ पानी मिल सके। विनय मिश्रा ने कहा कि दिल्ली पिछले एक साल से चुनौतियों का सामना कर रही है। सबसे पहले इन्होंने दिल्ली के उपमुख्यमंत्री को गिरफ्तार करवाया और फिर अरविंद केजरीवाल को भी गिरफ्तार करवाया ताकि दिल्ली के विकास कार्यों को रोका जा सके।

रेलरेस्ट्रो एप से ट्रेन सीट पर भोजन पहुंचाने की सुविधा 450 स्टेशनों तक पहुंची

एजेंसी

नई दिल्ली। ट्रेन फूड एप रेलरेस्ट्रो ने कहा है कि वह अब देश भर में 450 से अधिक रेलवे स्टेशनों पर रेल यात्रियों को उनकी सीट पर भोजन की आपूर्ति की सुविधा प्रदान कर रहा है। यह जानकारी रेलरेस्ट्रो की एक विज्ञप्ति में दी गयी। रेलरेट्रो के संस्थापक मनीष चंद्रा ने कहा, हम अपने एप की सुविधा को लेकर यात्रियों के भरोसे को देखकर काफी खुश हैं, हमारा लक्ष्य यात्रियों को खाने को लेकर अच्छा से अच्छा अनुभव प्रदान करना चाहते हैं।

दिल्ली के लोगों पर हुए अन्याय के खिलाफ कांग्रेस 'न्याय यात्रा' निकाल रही है : पवन खेड़ा

एजेंसी

नई दिल्ली । कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कांग्रेस की 'न्याय यात्रा' और वायनाड लोकसभा सीट पर हो रहे उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी प्रियंका गांधी के नामांकन के दौरान दिए एफिडेविट पर भाजपा के आरोपों पर प्रतिक्रिया दी है।कांग्रेस द्वारा न्याय यात्रा निकालने के पीछे उद्देश्य क्या है? इस पर कांग्रेस नेता ने कहा, पिछले 10 सालों में दिल्ली के साथ जो अन्याय हुआ है, चाहे वह केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा हो या राज्य की आम आदमी पार्टी सरकार द्वारा किया गया हो, न्याय यात्रा के माध्यम से उसका विरोध किया जा रहा है। न्याय यात्रा को दिल्ली के लोग बहुत उम्मीदों के साथ देख रहे हैं। प्रियंका गांधी पर अपनी संपत्ति के बारे में पूरी जानकारी न देने के भाजपा के आरोप पर कांग्रेस नेता ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, वह चुनौती दें, हम जवाब देंगे। आरोप लगाकर भागने का क्या औचित्य है। बता दें कि 26 अक्टूबर को भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने केरल के वायनाड से कांग्रेस की लोकसभा उम्मीदवार प्रियंका गांधी वाड्रा के हलफनामे पर सवाल उठाए थे। भाटिया ने कहा था कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के मुताबिक, हर उम्मीदवार को अपने आपराधिक इतिहास के साथ ही अपने और अपने जीवनसाथी की संपत्तियों तथा देनदारियों की जानकारी देनी होती है। लेकिन, प्रियंका गांधी वाड्रा ने इसे लेकर अपने हलफनामे में विस्तृत विवरण नहीं दिया है, कई जानकारियों और तथ्यों को छुपाया है।

सरदार पटेल की जयंती के कार्यक्रम में कार्यकर्ता बढ़चढ़ कर भाग लें : नड्डा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने पार्टी के कार्यकर्ताओं का देश के प्रथम उप प्रधानमंत्री भारत रत्न सरदार वल्लभ पटेल की 150वीं जयंती को धूमधाम से मनाने और मंगलवार को होने वाली रन फॉर यूनिटी में बढ़ चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया है।

श्री नड्डा ने आज यहां एक बयान में कहा कि भाजपा, भारत के लौह पुरुष, आजादी के बाद भारतवर्ष के एकीकरण के सूत्रधार, दूरद्रष्टा एवं देश के पहले उप प्रधानमंत्री भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को पूरे हर्षोल्लास के साथ देश भर में मनाती है। 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के पश्चात केंद्र सरकार पूरे देश में आदर एवं सम्मान के साथ सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती आदर एवं सम्मान के साथ मनाई जाती है।भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि सरदार पटेल की 143वीं जयंती के अवसर पर

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 31 अक्टूबर 2018 को दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का अनावरण किया था। इस दिन केंद्र सरकार की ओर से 'रन फॉर यूनिटी' सहित कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं और सरदार पटेल को नमन कर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के आह्वान पर हम 2014 से सरदार पटेल की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाते हैं।उन्होंने कहा, 'इस वर्ष सरदार पटेल जी जयंती का 150वां वर्ष शुरू हो रहा है। इस अवसर पर मोदी सरकार द्वारा अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। मेरा पार्टी के कार्यकर्ताओं से विनम्र अनुरोध है कि आप इन कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। साथ ही, भारत रत्न सरदार पटेल जी से जुड़े विचार और कार्य भी आप सोशल मीडिया पर सरदार150 हैशटैग के साथ साझा कर उनके विचारों, आदर्शों को प्रचारित एवं प्रसारित करें। श्री नड्डा ने कहा कि श्री मोदी ने अपने लोकप्रिय कार्यक्रम ÷मन की बात' के 115वें संस्करण में कहा है कि इस बार 31 अक्टूबर को सरदार पटेल की जयंती के दिन ही दीपावली का पर्व भी है। हम हर साल 31 अक्टूबर 'राष्ट्रीय एकता दिवस' पर 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन करते हैं। दीपावली की वजह से इस बार 29 अक्टूबर यानि 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन किया जायेगा। भाजपा अध्यक्ष ने कहा, 'मेरा आग्रह है, ज्यादा से ज्यादा संख्या में इसमें हिस्सा लीजिए देश की एकता के मंत्र के साथ ही फिटनेस के मंत्र को भी हर तरफ फैलाईये। पार्टी कार्यकर्ता 29 अक्टूबर को ÷रन फॉर यूनिटी÷ का कार्यक्रम सफल बनाने के लिए कार्य करें। मैं भाजपा के सांसदों एवं विधायकों सहित सभी जनप्रतिनिधियों तथा पार्टी के सभी पदाधिकारियों से भी अनुरोध है कि वे भी 'रन फॉर यूनिटी' सहित सभी कार्यक्रमों में भाग लें और सरदार पटेल को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करें। भारत की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने में सरदार पटेल की अद्वितीय भूमिका हम सभी के लिये सदैव प्रेरणा का अक्षय स्रोत रहेगी।

माधवी बुच के खिलाफ हम करेंगे कार्रवाई : राहुल

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड - सेबी प्रमुख माधवी बुच के खिलाफ सरकार कोई कार्रवाई नहीं कर रही है एवं ना ही इस मामले की जांच की जा रही है लेकिन कांग्रेस ने जांच की है तथा समय आने पर कार्रवाई भी की जाएगी। श्री गांधी ने कहा कि सेबी प्रमुख ने घोटाला किया है लेकिन उनसे सवाल नहीं पूछे जाते हैं और ना ही उन पर लगे आरोपों की जांच होती है। उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं होती है क्योंकि मोदी सरकार अडानी और बुच जैसे लोगों के पैसे की रक्षक बनी है और उनको बचाने में लगी है।

श्री गांधी ने कहा,÷सेबी अध्यक्ष माधबी बुच आईसीआईसीआई से किस बात के पैसे ले रही थीं। अध्यक्ष रहते हुए अनलिस्टेड कंपनियों में शेयर कैसे रख सकती थीं। उस कंपनी को स्टार्टअप इंडिया के करोड़ों रुपए क्यों मिले। सरकार किस डर से इस पर कार्रवाई नहीं कर रही। उन्होंने

कहा, साफ है बुच अडानी के पैसे, उनका मूल्यांकन और प्रतिष्ठा की रक्षा कर रही है मगर बुच को कौन और क्यों बचा रहा है। कांग्रेस नेता ने कहा कि उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो रही है लेकिन कांग्रेस करेगी। उन्होंने कहा,÷एजेंसियों ने जांच नहीं की, मीडिया ने सवाल नहीं किया, सरकार ने कार्रवाई नहीं की - हमने जांच भी की है, सवाल भी कर रहे हैं और वक्त आने पर कार्रवाई भी होगी।

वेद के मंत्रों के साथ तटरक्षक बल में शामिल हुए 'अदम्य' और 'अक्षर'

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय तट रक्षक ने गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जीएसएल) द्वारा निर्मित दो फास्ट पेट्रोल वेसल (एफपीवी) जहाज 'अदम्य' और 'अक्षर' एक साथ लॉन्च किये। भारतीय तटरक्षक के प्रवक्ता ने बताया कि ये जहाज उन आठ जहाजों का हिस्सा है जिनके लिए जीएसएल से 473 करोड़ रूपये का अनुबंध किया गया है। ये दोनों 60 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री के साथ बनाये गये हैं।

ये उन्नत जहाज सुरक्षा, निगरानी और नियंत्रण प्रणालियों से लैस हैं और इनसे तटरक्षकों को अपतटीय संपत्तियों और द्वीप क्षेत्रों की रक्षा में मदद मिलेगी। इनकी लंबाई 52 मीटर, चौड़ाई 8 मीटर, अधिकतम गति 27 समुद्री मील है और इसका वजन 320 टन है। जहाजों को अमेरिकन ब्यूरो ऑफ शिपिंग और इंडियन रजिस्टर ऑफ शिपिंग के कड़े दोहरे वर्ग

प्रमाणीकरण के तहत आईसीजी की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन और निर्मित किया गया है। जहाज का उद्घाटन और नामकरण महानिदेशक भारतीय तटरक्षक, परमेश शिवमणि की पत्नी प्रिया परमेश द्वारा 'अथर्ववेद' के मंत्रों के बीच एक समारोह में किया गया।

महानिदेशक ने सभा को संबोधित करते हुए जीएसएल और विभिन्न उद्योगों के प्रयासों की सराहना की कि सभी जहाजों के निर्माण में स्वदेशी सामग्री का जरूरत के अनुसार इस्तेमाल किया गया है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने के लिए जीएसएल के कर्मचारियों को बधाई देते हुए उन्होंने उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित किया कि रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' की दिशा में सही ढंग से आगे बढा जाना चाहिए। समारोह में जीएसएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ब्रजेश कुमार उपाध्याय और नौसेना, आईसीजी, जीएसएल और वर्गीकरण समितियों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

प्रदूषण के ख़िलाफ़ 'युद्ध' में तैनात होंगे 10 हज़ार मार्शल : आतिशी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा है कि दिल्ली में एक सप्ताह के अंदर 10 हज़ार नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों और बस मार्शलों को प्रदूषण के ख़िलाफ़ 'युद्ध' में ज़मीन पर तैनात किया जाएगा।

सुश्री आतिशी ने कहा कि प्रदूषण के खिलाफ जंग में 10,000 नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों और बस मार्शलों को ज़मीन पर तैनात किया जाएगा और सप्ताह भर में इनका पंजीकरण शुरू होगा। उन्होंने कहा कि, वाहनों को गलत तरीके से प्रदूषण सर्टिफिकेट न मिलें, इसके लिए सभी जांच केंद्रों पर नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों और बस मार्शल तैनात किए जाएँगे। साथ ही ग्रैप की पाबंदियां बढ़ने के साथ दिल्ली की सीमाओं पर चेकिंग के एनफोर्समेंट टीमों के साथ बस मार्शलों की भी तैनाती होगी। उन्होंने कहा कि

प्रदूषण रोकथाम के लिए दिल्ली नगर निगम और दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की मदद के साथ-साथ जागरूकता अभियानों में भी मार्शलों की तैनाती होगी। उन्होंने कहा कि, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) चाहे जितना परेशान करे,आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में हम दिल्लीवासियों की हर समस्या का समाधान जरूर निकालेंगे।

सुश्री आतिशी ने कहा कि दिल्ली में बसों में महिलाओं को सुरक्षा देने के लिए 2017-18 में दिल्ली सरकार ने बस मार्शल तैनात किए लेकिन 2023 के अप्रैल से केंद्र सरकार ने इन बस मार्शलों को हटाने की साजिश रची और इनकी तनख्वाह रोक दी। उन्होंने कहा कि आख़िरकार इन बस मार्शलों का संघर्ष रंग लाया और केंद्र सरकार को इन बस मार्शलों के संघर्ष के सामने झुकना पड़ा। दिल्ली सरकार कहती आ रही थी कि, इन बस मार्शलों को दोबारा नौकरी पर रखा जाए, उस प्रस्ताव को आख़िरकार केंद्र सरकार को मानना पड़ा।

दिल्ली में कांग्रेस की न्याय यात्रा का उद्देश्य दिल्ली वासियों को अन्याय से मुक्ति दिलाना : आलोक शर्मा

एजेंसी

द्वनई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी दिल्ली चुनाव से पहले राज्य में न्याय यात्रा शुरू करने जा रही है। पार्टी यह यात्रा आठ नवंबर से शुरू कर रही है। यह यात्रा आठ नवंबर से शुरू होकर चार दिसंबर तक चलेगी। इस पर कांग्रेस सचिव आलोक शर्मा ने प्रतिक्रिया दी है।

उन्होंने बात करते हुए कहा, मुझे लगता है कि न्याय का मतलब बहुत सरल है, जिन लोगों के साथ वर्षों से अन्याय हो रहा था, उससे उन्हें कैसे मुक्ति मिले। जिसे केजरीवाल की सरकार और मोदी की सरकार ने जो किया उससे कैसे निजात पाई जाए। आज दिल्ली प्रदूषण में नंबर वन है। कानून व्यवस्था से जुड़े अपराध में नंबर वन है। बेरोजगारी में नंबर वन है। महंगाई इस तरह से बढ़ रही है, जिस तरह से सारी समस्याएं हैं, पता ही नहीं चलता कि सड़क में गड्ढा है या गड्ढे में सड़क है। कांग्रेस पार्टी दिल्ली को न्याय दिलाने के लिए

न्याय यात्रा निकाल रही है। हम दिल्ली की जनता की आवाज भी सुनेंगे और अपने पिता की आवाज को लोगों के सामने रखेंगे। साथ ही उन्होंने कांग्रेस पार्टी द्वारा दिल्ली में 25 सीटों पर ध्यान केंद्रित करने की बात पर उन्होंने कहा, ÷नहीं, ऐसा नहीं है, ये सिर्फ मीडिया की खबरें हैं, सभी 70 सीटों पर ध्यान केंद्रित है और लड़ाई है। इसके बाद प्रियंका गांधी द्वारा वायनाड में भाजपा द्वारा लगाए गए संपत्ति छिपाने के आरोप पर उन्होंने कहा, ÷चुनाव आयोग इसकी जांच करेगा, भाजपा का काम हमें भटकाना है, असली मुद्दों पर बात करना नहीं है। वायनाड में इतनी त्रासदी हुई, भाजपा ने क्या किया, केंद्र सरकार ने क्या किया, यह हमें बताएं। बता दें कि कांग्रेस पार्टी दिल्ली चुनाव से पहले राज्य में न्याय यात्रा शुरू करने जा रही है। पार्टी यह यात्रा आठ नवंबर से शुरू कर रही है। यह यात्रा आठ नवंबर से शुरू होकर चार दिसंबर तक चलेगी। इस न्याय यात्रा का आयोजन पार्टी चार चरणों में करेगी। इस यात्रा के दौरान प्रत्येक चरण एक सप्ताह का होगा। इसमें 16 विधानसभा क्षेत्रों को शामिल करने का लक्ष्य रखा गया है। कांग्रेस पार्टी इस यात्रा के माध्यम से अपने वादों और मुद्दों को जनता तक पहुंचाने का प्रयास करेगी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत जेपी नड्डा ने सत्यनिष्ठा की ली शपथ, पारदर्शिता पर दिया जोर

एजेंसी

नई दिल्ली। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के भाग के रूप में निर्माण भवन में केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याणा मंत्री जेपी नड्डा ने मंत्रालय के अधिकारियों और डॉक्टरों के साथ सत्यनिष्ठा की शपथ के लिए आयोजित समारोह में भाग लिया। जेपी नड्डा ने सोशल मीडिया एक्स पर तस्वीरें साझा करते हुए कहा कि यह उत्सव हम सभी को शासन में पारदर्शिता और नैतिक आचरण बनाए रखने की हमारी साझा जिम्मेदारी की याद दिलाता है।

जेपी नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गतिशील नेतृत्व में हमारी सरकार भ्रष्टाचार मुक्त भारत के लिए प्रतिबद्ध है। सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए हर आवश्यक कदम उठा रही है। यह सुनिश्चित करने के लिए हाथ मिलाएं ताकि ये मूल्य हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बनें, क्योंकि हम विकसित भारत-सभी के लिए एक विकसित और समृद्ध भारत- के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में काम कर रहे हैं। शपथ समारोह में ऑनलाइन रूप से राममनोहर लोहिया अस्पताल के निदेशक और चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजय शुक्ला ने अस्पताल के चिकित्सकों और प्रशासनिक कर्मचारियों के साथ भाग लिया। राष्ट्र की समृद्धि के लिए अखंडता की संस्कृति विषय पर शपथ समारोह का उद्देश्य कर्मचारियों को पारदर्शिता, जवाबदेही और अखंडता की आवश्यकता के बारे में संवेदनशील बनाना है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अवैध भुगतान गेटवे के खिलाफ अलर्ट जारी किया

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्रालय के भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) ने अंतरराष्ट्रीय संगठित साइबर अपराधियों द्वारा म्यूल बैंक खातों का इस्तेमाल करके बनाए गए अवैध भुगतान गेटवे के खिलाफ़ एक नोटिस जारी किया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में एमएचए सभी कानून प्रवर्तन एजेंसियों (एलडब्ल्यूए) के सहयोग से साइबर सुरक्षित भारत बनाने के लिए सभी कदम उठा रहा है।

गुजरात पुलिस (एफआईआर 0113/2024) और आंध्र प्रदेश पुलिस (एफआईआर 310/2024) द्वारा हाल ही में किए गए राष्ट्रव्यापी छापों से पता चला है कि अंतरराष्ट्रीय अपराधियों ने म्यूल व किराए के खातों का इस्तेमाल करके अवैध डिजिटल भुगतान गेटवे बनाए हैं। मनी लॉन्ड्रिंग को एक सेवा के रूप में सुविधाजनक बनाने वाले इन अवैध बुनियादी ढांचों का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों की आय को लूटने के लिए किया जाता है।

एमएचए के अनुसार, ऑपरेशन के दौरान पहचाने गए कुछ भुगतान

गेटवे में पीसपे, आरटीएक्स पे, पोकोपे, आरपीपे आदि शामिल हैं। पता चला है कि ये गेटवे मनी लॉन्ड्रिंग को एक सेवा के रूप में उपलब्ध कराते हैं और विदेशी नागरिकों द्वारा संचालित होते हैं। आई4सी ने नागरिकों को सलाह दी है कि वे अपने बैंक खाते, कंपनी पंजीकरण प्रमाणपत्र, उद्यम आधार पंजीकरण प्रमाणपत्र किसी को न बेचें और किराए पर न दें। ऐसे बैंक खातों में जमा अवैध धनराशि के लिए गिरफ़्तारी सहित कानूनी परिणाम हो सकते हैं। बैंक उन बैंक खातों के दुरुपयोग की पहचान करने के लिए जांच कर सकते हैं जिनका उपयोग अवैध भुगतान गेटवे स्थापित करने के लिए किया जाता है। नागरिकों को किसी भी साइबर अपराध की तुरंत हेल्पलाइन नंबर 1930 या www.cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करनी चाहिए और सोशल मीडिया पर 'साइबरदोस्त' चैनल व अकाउंट को फ़ॉलो करना चाहिए।

प्रियंका गांधी वाड्रा के चुनाव अभियान पर भाजपा का तंज, बताया राजनीतिक पर्यटक

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रियंका गांधी वाड्रा ने सोमवार से वायनाड लोकसभा के उपचुनाव में प्रचार -प्रसार अभियान की शुरुआत कर दी। इस पर भारतीय

जनता पार्टी ने तंज कसते हुए प्रियंका गांधी को राजनीतिक पर्यटक बताया है। एक वीडियो जारी करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सीआर केसवन ने कहा कि वायनाड के मतदाताओं को राहुल गांधी के विश्वासघात का बहुत कड़वा अनुभव हुआ है। भाई की तरह प्रियंका गांधी वाड्रा भी पूरी तरह से अवसरवादी और अविश्वसनीय है। प्रियंका गांधी वाड्रा एक राजनीतिक पर्यटक हैं। केसवन ने कहा कि नेहरू-गांधी राजवंश अहंकार के साथ वायनाड को अपने सामंती राजनीतिक खेल के मैदान के रूप में उपयोग करने की कोशिश कर रहा है। इसे वायनाड के लोग बहुत अच्छी तरह से जान चुके हैं। राहुल गांधी ने वायनाड के मतदाताओं को दिखा दिया कि उन्हें इस स्थान से कोई लगाव नहीं है। वे लोगों को गुमराह करने की कोशिश कर रहे थे कि वायनाड के दो सांसद होंगे। लेकिन जब वे वायनाड के सांसद थे, तब उन्होंने वहां के लिए कुछ नहीं किया। जब वे सांसद थे, तब भी एक अनौपचारिक सांसद बनना भूल गए और उन्होंने वायनाड को छोड़ना सही समझा।

पंजाब में पराली जलाने की वजह से दिल्ली में बढ़ रहा प्रदूषण : मनोज तिवारी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली में प्रदूषण के बढ़ते स्तर को लेकर भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने दिल्ली सरकार पर हमला बोला। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि दिल्ली में बढ़ रहे प्रदूषण की एक वजह पंजाब भी है, जहां पराली जलाने के मामले लगातार बढ़े हैं।

भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा, दिल्ली के प्रदूषण में एक बहुत बड़ा कारण पंजाब की पराली है। आप देखेंगे तो पता चलेगा कि दो दिन पहले पंजाब में पराली जलाने की 108 घटनाएं दर्ज की गई हैं, जबकि उत्तर प्रदेश में 11 और हरियाणा में 16 मामले सामने आए हैं। उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री पर सवाल उठाते हुए कहा, निश्चित रूप से भगवंत मान को हम लोगों से मिलना चाहिए था, लेकिन अब हम निराश होकर जा रहे हैं। आज उनसे मुलाकात नहीं होना बताता है कि वह दिल्ली की हालत को लेकर कितने गंभीर हैं। इससे पहले दिल्ली के भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने एक्स पर एक पोस्ट शेयर करते हुए आम आदमी पार्टी और उसके संयोजक अरविंद केजरीवाल पर सवाल उठाए थे। उन्होंने एक्स पर लिखा, दिल्ली की मूलभूत समस्याओं में वायु प्रदूषण का स्थान प्रमुख है, जिसका कारण पराली का जलना और उससे होने वाला धुआं ही है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आम

आदमी पार्टी के नेतृत्व वाली भ्रष्टाचारी पंजाब सरकार पराली जलाने को रोकने में पूर्णतः विफल रही है। वायु प्रदूषण जैसी प्रमुख समस्या से दिल्ली को बचाने के प्रयास में आज दिल्ली स्थित कपूरथला हाउस में हमारे एक प्रतिनिधिमंडल ने पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान तक जनहित की मांग पहुंचाने का प्रयास किया। भाजपा का उद्देश्य केवल मुख्यमंत्री से मिलकर सामूहिक विमर्श कर स्थायी समाधान हेतु संवाद करना था, लेकिन आम आदमी पार्टी और केजरीवाल के चरित्र के अनुरूप ही पंजाब के मुख्यमंत्री ने भी अपनी विश्वासघाती कार्यशैली दिखाई और जनहित की अनदेखी कर प्रतिनिधिमंडल से मिलने तक का समय नहीं निकाला। हमेशा की तरह आज पुनः स्पष्ट हो गया है कि आप और केजरीवाल का चरित्र केवल धोखा, भ्रष्टाचार, घोटाला और स्वार्थ सिद्धि प्रधान ही है।

जेपीसी की बैठक में जोरदार हंगामा, विपक्षी दलों ने किया वॉकआउट

एजेंसी

नई दिल्ली। वक्फ (संशोधन) विधेयक - 2024 पर विचार- विमर्श करने के लिए बुलाई गई जेपीसी की बैठक में भी जबरदस्त हंगामा हुआ। विपक्षी दलों के सांसदों ने आरोप लगाया कि बैठक में फर्जी प्रजेंटेशन दिया जा रहा है और इसी पर चर्चा भी कराई जा रही है।सूत्रों के मुताबिक, दिल्ली वक्फ बोर्ड के प्रजेंटेशन के दौरान विपक्षी दलों ने उसकी वैधता पर ही सवाल उठाते हुए हंगामा शुरू कर दिया। विपक्षी सांसदों की तरफ से तर्क दिया गया कि दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी पहले ही जेपीसी अध्यक्ष जगदंबिका पाल को पत्र लिखकर यह अनुरोध कर चुकी हैं कि दिल्ली वक्फ बोर्ड की रिपोर्ट का संज्ञान नहीं लिया जाए। बताया जा रहा है कि दिल्ली वक्फ बोर्ड की रिपोर्ट में वक्फ संपत्तियों को लेकर कई तरह की गड़बड़ियों का जिक्र किया गया है। विपक्षी दलों के इन आरोपों पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के सांसदों के बीच जोरदार बहस हुई। इसके बाद विपक्षी सांसदों ने बैठक से वॉकआउट कर दिया। हालांकि थोड़ी देर बाद विपक्षी सांसद फिर से बैठक में शामिल हो गए। आपको बता दें कि, जेपीसी ने वक्फ संशोधन कानून पर सुझाव देने के लिए सोमवार को दिल्ली वक्फ बोर्ड, हरियाणा वक्फ बोर्ड, पंजाब वक्फ बोर्ड, उत्तराखंड वक्फ बोर्ड, सुप्रीम कोर्ट एवं हाई कोर्ट के पूर्व न्यायाधीशों के समूह कॉल फॉर जस्टिस और वक्फ किराएदार कल्याण संघ को बुलाया है। अब जेपीसी की बैठक 29 अक्टूबर को भी होगी। केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय के प्रतिनिधि मंगलवार को एक बार फिर से जेपीसी की बैठक में मंत्रालय की तरफ से अहम प्रजेंटेशन देंगे। आपको बता दें कि, जेपीसी की बैठक में सत्ता पक्ष और विपक्ष के सांसदों के बीच लगातार तीखी बहस हो रही है। विपक्षी सांसद जहां सत्ता पक्ष के सांसदों के रवैए पर सवाल उठा रहे हैं, तो वहीं दूसरी तरफ सत्ता पक्ष के सांसद विपक्षी सांसदों के रवैए पर सवाल खड़ा कर रहे हैं। इससे पहले , 22 अक्टूबर को हुई जेपीसी की बैठक के दौरान तृणमूल कांग्रेस के सांसद कल्याण बनर्जी ने बैठक में हंगामे के माहौल के बीच टेबल पर रखी कांच की पानी की बोतल को टेबल पर पटक कर फोड़ दिया था। इससे कल्याण बनर्जी को चोट भी लग गई।

आशीष कचोलिया और कैप्री ग्लोबल होल्डिंग्स ने क्राड्रेंट फ्यूचर टेक के प्री-आईपीओ में किया निवेश

एजेंसी

मुंबई/नई दिल्ली। ट्रेन नियंत्रण और सिग्नलिंग सिस्टम विकसित करने वाली अनुसंधान-उन्मुख नई पीढ़ी की कंपनी क्राड्रेंट फ्यूचर टेक लिमिटेड ने आशीष कचोलिया, कैप्री ग्लोबल और अन्य प्रमुख व्यक्तिगत निवेशकों से 48 करोड़ रुपये जुटाए हैं। क्राड्रेंट फ्यूचर टेक लिमिटेड ने बताया कि कंपनी ने अपने प्री-आईपीओ दौर में आशीष कचोलिया, कैप्री ग्लोबल होल्डिंग्स और अन्य उल्लेखनीय व्यक्तिगत निवेशकों से 48 करोड़ रुपये जुटाए हैं। कंपनी के मुताबिक ये लेन-देन कंपनी के प्रमोटरों द्वारा निवेशकों को इक्विटी शेयरों की बिक्री अर्थात द्वितीयक बिक्री है। यह कोई नया निर्गम या प्राथमिक बिक्री नहीं है। कंपनी ने बताया कि 275 करोड़ रुपये का मूल आईपीओ आकार अभी भी बरकरार है। कंपनी ने 26 अक्टूबर, 2024 को की गई एक सार्वजनिक घोषणा में कहा कि अपने प्रमुख बैंकरों के परामर्श से, उसने व्यक्तिगत और संस्थागत निवेशकों को 240 रुपये प्रति शेयर (230 रुपये के प्रीमियम सहित) के निर्गम मूल्य पर 2,000,000 इक्विटी शेयर जारी किए हैं, जिसका कुल योग 48 करोड़ रुपये होता है। इस इन्वेस्टमेंट राउंड में प्रमुख रूप से हिस्सा लेने वालों में सूर्यवंशी कमोट्रेड प्राइवेट लिमिटेड (आशीष कचोलिया) शामिल हैं, जिसने 765,000 इक्विटी शेयर हासिल किए हैं, जबकि प्लांटिफाई कैपिटल लिमिटेड ने 125,000 शेयर प्राप्त किए हैं।

8वें एफआईआई में भाग लेने रियाद जाएंगे केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल, लुलु हाइपरमार्केट में दिवाली उत्सव का करेंगे उद्घाटन

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल 29-30 अक्टूबर तक आर्थिक संबंधों को बढ़ाने और 8वें फ्यूचर इन्वेस्टमेंट इनिशिएटिव (एफआईआई) में भाग लेने के लिए सऊदी अरब के दौरे पर जाएंगे। मंत्री गोयल रियाद के लुलु हाइपरमार्केट में दिवाली उत्सव का उद्घाटन भी करेंगे। इसके साथ ही वे भारतीय दूतावास में एक जिला, एक उत्पाद (ओडीओपी) दीवार का अनावरण भी करेंगे। वाणिज्?य एवं उद्योग मंत्रालय से जारी एक बयान में कहा गया है कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल 29-30 अक्टूबर तक सऊदी अरब की यात्रा पर रहेंगे। गोयल के इस यात्रा का उद्देश्य भारत-सऊदी अरब रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करना तथा व्यापार, निवेश और आर्थिक सहयोग के नए रास्ते तलाशना है, जो भारत की बढ़ती वैश्विक आर्थिक उपस्थिति को रेखांकित करता है। मंत्रालय के मुताबिक गोयल इस दौरान रियाद में फ्यूचर इन्वेस्टमेंट इनिशिएटिव (एफआईआई) के 8वें संस्करण में भाग लेंगे, जो एक महत्वपूर्ण मंच है और वैश्विक नेताओं, निवेशकों और नवोन्मेषकों को एक साथ लाता है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल इस दौरान रियाद के लुलु हाइपरमार्केट में दिवाली उत्सव का उद्घाटन करेंगे। इसके अलावा केंद्रीय मंत्री भारतीय दूतावास में एक जिला, एक उत्पाद (ओडीओपी) दीवार का अनावरण करेंगे, जिससे वैश्विक स्तर पर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और स्थानीय शिल्प कौशल को बढ़ावा मिलेगा।

वारी एनर्जीज का शेयर करीब 70 फीसदी प्रीमियम के साथ सूचीबद्ध

मुंबई/नई दिल्ली। सोलर पीवी मॉड्यूल निर्माता वारी एनर्जीज लिमिटेड का शेयर अपने निर्गम मूल्य 1503 रुपये से करीब 70 फीसदी उछाल के साथ शेयर बाजार में सूचीबद्ध हुआ। कंपनी ने 4,321.44 करोड़ रुपये के आईपीओ के लिए मूल्य का दायरा (प्राइस बैंड) 1,427-1,503 रुपये प्रति शेयर तय किया था। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) पर कंपनी का शेयर 2,550 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ है, जो निर्गम मूल्य से 69.66 फीसदी की बढ़त को दर्शाता है। इसके बाद यह 72.98 फीसदी चढ़कर 2,600 रुपये पर पहुंच गया। वहीं, नेशनल स्टॉक एक्सचे (एनएसई) पर कंपनी का शेयर 66.33 फीसदी की बढ़त के साथ 2,500 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। कंपनी का बाजार मूल्यांकन (मार्केट कैप) 67,866.35 करोड़ रुपये रहा। वारी एनर्जीज लिमिटेड के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को बोली के अंतिम दिन 76.34 गुना अभिदान मिला था। ये आईपीओ 21 से 23 अक्टूबर तक निवेश के लिए खुला हुआ था। कंपनी का आईपीओ तीन दिनों में कुल 79.44 गुना सब्सक्राइब हुआ। खुदरा कैटेगरी में ये इश्यू 11.27 गुना, क्वालीफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) में 215.03 गुना, जबकि नॉन-इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) कैटगरी में 65.25 गुना सब्सक्राइब हुआ था।

एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस का मुनाफा 12 प्रतिशत बढ़ा

मुंबई। आवास ऋण प्रदान करने वाली प्रमुख कंपनी एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 1329 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 1188 करोड़ रुपये की तुलना में 12 प्रतिशत अधिक है। कंपनी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी त्रिभुवन अधिकारी ने निदेशक मंडल की बैठक के बाद संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी देते हुये कहा कि इस तिमाही में कंपनी का कुल राजस्व 6926 करोड़ रुपये रहा है जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 6753 करोड़ रुपये की तुलना में करीब तीन प्रतिशत अधिक है।

सांची का नया उत्पाद नेचुरल नारियल पानी लॉन्च, मंत्री पटेल ने किया शुभारंभ

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश के सहकारी दुग्ध संघ सांची ने नया उत्पाद पाश्चरीकृत नेचुरल नारियल पानी लॉन्च किया है। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) लखन पटेल ने भोपाल सहकारी दुग्ध संघ के मुख्य डेयरी प्लांट में इस नेचुरल नारियल पानी की बिक्री का शुभारंभ किया। इस अवसर पर वेटरनरी कौंसिल ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष डॉ उमेश शर्मा, संचालक पशुपालन एवं डेयरी डॉ. पीएस पटेल आदि उपस्थित थे। मंत्री पटेल ने स्वयं भी नारियल पानी पिया और उसकी सराहना की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी ने सांची नारियल पानी का सेवन किया और उसे गुणवत्ता एवं स्वाद युक्त बताया।

इस अवसर पर मंत्री पटेल ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए दुग्ध उत्पादन से बड़ा कोई रास्ता नहीं है। मध्य प्रदेश सहकारी दुग्ध संघ अपने सांची ब्रांड के माध्यम से नए नए गुणवत्तापूर्ण उत्पाद बाजार में ला रहा है। आज सांची ने

नेचुरल नारियल पानी लॉन्च किया है, जो कि अत्यंत गुणवत्तापूर्ण और स्वास्थ्य वर्धक है। भविष्य में दुग्ध संघ की माइनर मिलेट्स कोदो-कुटकी के उत्पाद भी बाजार में लाने की योजना है। मंत्री पटेल ने कहा कि भोपाल दुग्ध संघ की आय निरंतर बढ़ रही है। इस वर्ष अभी तक लगभग 700 करोड़ का लाभ दुग्ध संघ को हुआ है। दुग्ध संघ निरंतर किसानों के लाभ के लिए कार्य तो कर ही रहा है, संघ के कर्मचारियों के कल्याण में भी पीछे नहीं है। अब किसानों के साथ ही कर्मचारियों का भी बीमा कराया जाएगा। मंत्री पटेल ने कहा कि सहकारिता का मूल सिद्धांत है पारदर्शिता और जुड़े हुए हर व्यक्ति तक लाभ पहुंचाना। हमारी सरकार इसी सिद्धांत पर कार्य कर रही है। हमारा उद्देश्य है दुग्ध उत्पादक किसानों को अधिक से अधिक आमदनी हो और हम इसके लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व इस वर्ष हमारी सरकार गौ-संरक्षण एवं गौ-संवर्धन वर्ष मना रही है। गायों की सुरक्षा और उनके समुचित पालन पोषण के प्रति जन-सामान्य में जागरूकता लाने के लिए इस वर्ष सरकार गोवर्धन पूजा पर 2 नवंबर को बड़ी गौ-शालाओं में गो संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करने जा रही है। इन कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में भाग ले और इस पावन कार्य में अपना योगदान दें।

एयर इंडिया को विमान के अंदरूनी हिस्सों में बदलाव के लिए डीजीसीए की मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। टाटा की अगुवाई वाली एयर इंडिया को विमान के अंदरूनी हिस्सों में खुद सुधार या बदलाव करने के लिए नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) की मंजूरी मिल गई है। एयर इंडिया ने एक जारी एक बयान में कहा कि एयर इंडिया पहली भारतीय एयरलाइन कंपनी है, जिसे विमानन नियामक डीजीसीए का डिजाइन ऑर्गनाइजेशन अप्रूवल मिला है, जो हमें विमान के अंदरूनी हिस्सों को इन-हाउस संशोधित करने की अनुमति देता है। कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एवं प्रबंध निदेशक एमडी कैम्पबेल विल्सन ने कहा टाटा टेक्नोलॉजीज के साथ साझेदारी में यह पहल एयर इंडिया के विश्व स्तरीय एयरलाइन बनने के अपने प्रयास में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक और मील का पत्थर है। उल्लेखनीय है कि टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन कंपनी एयर इंडिया अपने बेड़े को नया रूप देने और परिचालन का विस्तार करने पर काम कर रही है। कंपनी ने अपने बेड़े में शामिल विमान के अंदरूनी हिस्सों को बेहतर बनाने के लिए टाटा टेक्नोलॉजीज के साथ सहयोग किया है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टैक्स प्रैक्टिशनर्स के लिए नया अवसर : नारायण जैन

एजेंसी

कोल्हापुर। ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टिशनर्स (एआईएफटीपी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट नारायण जैन ने कोल्हापुर में आयोजित राष्ट्रीय कर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) भारत के टैक्स प्रैक्टिशनर्स, अधिवक्ताओं और चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के लिए एक नया अवसर प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने बताया कि भारत पहले से ही सूचना प्रौद्योगिकी में अग्रणी है और अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से यह क्षेत्र कर प्रैक्टिस के क्षेत्र में नए दरवाजे खोल सकता है। एआईएफटीपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट जैन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत के कानून मंत्री को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सही उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए जल्द से जल्द कानूनी ढांचे को स्थापित करने पर ध्यान देना चाहिए, ताकि इसका दुरुपयोग न हो सके। उन्होंने एनवीआईडिया के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी जेन्सेन हुआंग के बयान का भी उल्लेख किया, जिसमें एआई के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला गया था। जैन ने बताया कि यह सम्मेलन 26 और 27 अक्टूबर को कोल्हापुर में एआईएफटीपी द्वारा जीएसटीपीएएम, एमसीसीआईए और अन्य कई कर संघों के सहयोग से आयोजित किया गया। दो दिवसीय इस सम्मेलन को डिप्टी प्रेसिडेंट समीर जानी ने भी संबोधित किया और आयोजकों की विशेष सराहना की। सम्मेलन के आयोजन में विनायक पाटकर (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) और अरुण बाहेती की महत्वपूर्ण भूमिका की भी

तारीफ की गई। सम्मेलन में महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर (एमसीसीआईए) के अध्यक्ष ललित गांधी ने कर पेशेवरों की भूमिका की प्रशंसा की और आयकर के साथ-साथ जीएसटी के अनुपालन के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कर सुधारों के लिए प्रतिनिधित्व करने और कर प्रणाली को सरल बनाने में अपने चैंबर और एआईएफटीपी की सक्रिय भागीदारी का सुझाव दिया।

केंद्र को एचएएल, एसपीएमसीआईएल और यूसीआईएल से मिला 1013 करोड़ रुपये का लाभांश

एजेंसी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल), सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) और यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) ने केंद्र सरकार को लाभांश किश्तों के रूप में कुल 1,013 करोड़ रुपये का भुगतान किया है। वित्?त मंत्रालय के तहत निवेश और सार्वजनिक परिसंपत्ति प्रबंधन विभाग (दीपम) के सचिव ने 'एक्स' पोस्ट पर जारी बयान में कहा कि केंद्र सरकार को लाभांश किश्तों के रूप में एचएएल, एसपीएमसीआईएल और यूसीआईएल से क्रमशः 623 करोड़ रुपये, 364 करोड़ रुपये और 26 करोड़ रुपये रुपये प्राप्त हुए हैं। दीपम सचिव ने कहा कि इन कंपनियों ने इस तरह सरकार को कुल 1,013 करोड़ रुपये का भुगतान किया है। उल्लेखनीय है कि हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) एक सार्वजनिक क्षेत्र की एयरोस्पेस रक्षा कंपनी है, जिसका मुख्यालय बेंगलुरु में है। सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग के सिक्का और मुद्रा प्रभाग के तहत एक संगठन है। यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) यूरेनियम खनन और प्रौद्योगिकी के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत भारत सरकार का एक सार्वजनिक उपक्रम है।

लगातार 1 हफ्ते की गिरावट के बाद शेयर बाजार में लौटी तेजी, सेंसेक्स और निफ्टी उछले

नई दिल्ली। पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान लगातार कमजोरी का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार ने आज दिवाली वाले सप्ताह की जोरदार शुरुआत की। आज के कारोबार की शुरुआत भी बढ़त के साथ हुई थी। शुरुआती 1 घंटे के कारोबार में उतार-चढ़ाव भी होता हुआ नजर आया लेकिन इसके बाद खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने जोरदार तेजी दिखाई। सेंसेक्स जहां इंट्रा-डे में 1,137 अंक चढ़ गया, वहीं निफ्टी ने भी 311 अंक से अधिक की छलांग लगाई। हालांकि दिन के दूसरे सत्र में मुनाफा वसूली होने की वजह से ये दोनों सूचकांक ऊपरी स्तर से फिसल गए। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.76 प्रतिशत और निफ्टी 0.65 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए।आज दिन भर के कारोबार के दौरान मेटल, बैंकिंग, रियल्टी और फार्मास्यूटिकल सेक्टर के शेयरों में सबसे अधिक खरीदारी होती रही। इसके साथ ही आईटी, ऑटोमोबाइल, कंज्यूमर ड्यूरेबल, एफएमसीजी, ऑयल एंड गैस, टेक और पीएसई इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद हुए। कैपिटल गुड्स सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.69 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 1.11 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

प्रह्लाद जोशी ने चावल मिलर्स की शिकायतों के समाधान के लिए मोबाइल ऐप किया लॉन्च

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय उपभोक्ता, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मामलों के मंत्री प्रह्लाद जोशी ने नई दिल्ली में चावल मिलर्स के लिए भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के शिकायत निवारण प्रणाली (एफसीआई-जीआरएस) मोबाइल ऐप को लॉन्च किया। इस नए ऐप के माध्यम से चावल मिलर्स की चिंताओं को दूर करने में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाना है।

चावल मिलर्स के लिए एफसीआई की शिकायत निवारण प्रणाली मोबाइल ऐप एफसीआई-जीआरएस ऐप की लॉन्चिंग के अवसर पर प्रहलाद जोशी ने कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है। उन्होंने कहा कि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता एक प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करना है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के

डिजिटल इंडिया विजन के अनुरूप इस उल्लेखनीय कदम का उद्देश्य एफसीआई के साथ सीधे संपर्क स्थापित करके देशभर में हमारे मेहनती चावल मिलर्स को सशक्त बनाना है, जिससे शिकायत निवारण प्रणाली को सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाया जा सके। जोशी ने प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि यह एक ऐसी शासन प्रणाली बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करता है, जो वास्तव में समावेशी, जवाबदेह और नागरिकों की जरूरतों में निहित हो। उपभोक्ता, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मामलों के मंत्री ने कहा कि यह ऐप चावल मिलर्स को सीधे अपनी शिकायतें दर्ज करने की अनुमति देता है। एक बार शिकायत दर्ज होने के बाद तीन दिनों के भीतर जांच करने के लिए तीन सदस्यीय टीम भेजी जाएगी, जो मिलर्स से बातचीत करेगी और उसी अवधि के भीतर समाधान की सिफारिश करेगी। भारतीय खाद्य निगम मुख्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में अधिकारियों ने ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के उच्चतम मानकों को बनाए रखने की शपथ भी ली। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री के 'डिजिटल इंडिया' विजन के अनुरूप ये ऐप चावल मिलर्स को शिकायत दर्ज करने, स्थिति को ट्रैक करने और एफसीआई से प्रतिक्रिया और टिप्पणियां प्राप्त करने के लिए एक सहज मंच प्रदान करता है। इस प्रकार एंड-टू-एंड डिजिटल तरीके से जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ाया जा रहा है।

अंबुजा सीमेंट का मुनाफा 52 प्रतिशत लुढ़का

मुंबई। विभिन्न क्षेत्रों में कारोबार करने वाले दिग्गज अडानी समूह की सीमेंट निर्माता कंपनी अंबुजा सीमेंट का चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में सकल शुद्ध मुनाफा इसके पिछले वित्त वर्ष के 987.24 करोड़ रुपये के मुकाबले 52 प्रतिशत लुढ़ककर 472.89 करोड़ रुपये रह गया। कंपनी ने निदेशक मंडल की बैठक के बाद शेयर बाजार को बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 की जुलाई-सितंबर तिमाही में उसे 472.89 करोड़ रुपये का सकल शुद्ध मुनाफा हुआ, जो, वित्त वर्ष 2023-24 की समान तिमाही के 987.24 करोड़ रुपये के मुकाबले 52 प्रतिशत कम है। आलोच्य अवधि में कंपनी की कुल आय में 0.12 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई और यह 7899.99 करोड़ रुपये से घटकर 7890.14 करोड़ रुपये रह गया। हालांकि इस अवधि में उसका कुल व्यय 6564.28 करोड़ रुपये के मुकाबले करीब सात प्रतिशत बढ़कर 7023.49 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

लिस्टिंग के जरिये 2 कंपनियों की स्टॉक मार्केट में एंट्री, मजबूत शुरुआत के बाद लिस्टिंग लेवल से नीचे लुढ़के

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में आज दो कंपनियों ने लिस्टिंग के जरिए दस्तक दी। इन दोनों कंपनियों के शेयर आज प्रीमियम के साथ लिस्ट हुए, लेकिन दिन के कारोबार में बिकवाली के दबाव की वजह से दोनों कंपनियों के शेयर लिस्टिंग प्राइस से नीचे गिर कर बंद हुए। लिस्टिंग लेवल से गिर कर बंद होने के बावजूद इन दोनों में से एक कंपनी वारी एनर्जीज के आईपीओ निवेशक 55.62 प्रतिशत के फायदे में रहे, वहीं दूसरी कंपनी प्रीमियम प्लास्ट के निवेशकों को 0.20 प्रतिशत के नुकसान का सामना करना पड़ा।सोलर पैनल बनाने वाली कंपनी वारी एनर्जीज के शेयरों की आज में घरेलू शेयर बाजार में शानदार एंट्री हुई। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज पर कंपनी के शेयर 69.66 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 2,550 रुपये के स्तर पर लिस्ट हुए। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर कंपनी के शेयर 66.33 प्रतिशत

प्रीमियम के साथ 2,500 रुपये के स्तर पर लिस्ट हुए। लिस्टिंग के थोड़ी देर बाद ही खरीदारी के सपोर्ट से कंपनी के शेयर उछल कर 2,624.40 रुपये के स्तर तक पहुंच गए। इस तेजी के बाद मुनाफा वसूली शुरू हो गई, जिसकी वजह से इस शेयर की चाल में भी गिरावट आ गई। बिकवाली के दबाव में ये शेयर 2,300 रुपये के स्तर तक लुढ़क गया। हालांकि इसके बाद हुई खरीदारी के सपोर्ट से ये शेयर 2,338.90 रुपये के स्तर पर बंद होने में सफल रहा। लिस्टिंग लेवल से करीब 160 रुपये गिर कर बंद होने के बावजूद कंपनी के आईपीओ निवेशक आज ओवरऑल 55.62 प्रतिशत का मुनाफा कमाने में सफल रहे।आज ही कमर्शियल गाड़ियां बनाने वाली कंपनियों को प्लास्टिक पार्ट्स की सप्लाई करने वाली कंपनी प्रीमियम प्लास्ट के शेयर ने भी लिस्टिंग के जरिए घरेलू शेयर बाजार में एंट्री की। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 49 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 5 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 51.45 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के तुरंत बाद खरीदारी के सपोर्ट से इस शेयर की कीमत 51.75 रुपये तक पहुंची, लेकिन इसके बाद बिकवाली के दबाव में थोड़ी देर में ही ये शेयर 48.90 रुपये के लोअर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। इस तरह कंपनी के आईपीओ निवेशकों को पहले दिन ही 0.20 प्रतिशत के नुकसान का सामना करना पड़ा।

एनटीपीसी ग्रीन और अवांसे फाइनेंशियल को आईपीओ लाने की मंजूरी, सेबी ने जारी किया ऑब्जर्वेशन लेटर

एजेंसी

नई दिल्ली। मार्केट रेगुलेटर सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी और अवांसे फाइनेंशियल सर्विसेज को आईपीओ लाने के लिए हरी झंडी दे दी है। सेबी ने इन दोनों कंपनियों के नाम से ऑब्जर्वेशन लेटर भी जारी कर दिया है। इन कंपनियों को अब ऑब्जर्वेशन लेटर जारी होने के बाद 1 साल की अवधि में अपना आईपीओ लॉन्च करना होगा। देश की सबसे बड़ी बिजली उत्पादक कंपनी एनटीपीसी की सब्सिडियरी कंपनी एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी ने 18 सितंबर को मार्केट रेगुलेटर सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रोस्पेक्टस (डीआरएचपी) जमा कराया था। कंपनी अपने पब्लिक इश्यू के माध्यम से 10,000 करोड़ रुपये जुटाना चाहती है। कंपनी की ओर से उपलब्ध कराई गई जानकारी में बताया गया है कि पब्लिक इश्यू के जरिए सिर्फ फ्रेश इक्विटी शेयर जारी किए जाएंगे। इसमें ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) के जरिए कोई बिक्री नहीं होगी। आईपीओ द्वारा जुटाए जाने वाले

पैसे के 75 प्रतिशत हिस्से का इस्तेमाल कंपनी के पुराने कर्ज को चुकाने में किया जाएगा जबकि शेष राशि का इस्तेमाल सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों में किया जाएगा। इसी तरह नॉन बैंकिंग फाइनेंस कंपनी अवांसे फाइनेंशियल सर्विसेज ने 31 जुलाई को सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रोस्पेक्टस (डीआरएचपी) जमा कराया था। कंपनी ने अपने आईपीओ में नए इश्यू के जरिए 1,000 करोड़ रुपये और ऑफर फॉर सेल के जरिए 2,500 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य तय किया है। मुंबई की ये कंपनी एसेट अंडर मैनेजमेंट के मामले में देश की दूसरी सबसे बड़ी एजुकेशनल फोकस्ड एनबीएफसी है।

देश का आर्थिक प्रदर्शन संतोषजनक, मांग पर नजर रखने की जरूरतः वित्त मंत्रालय रिपोर्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन चालू वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही के दौरान संतोषजनक रहा है लेकिन आगे मांग की स्थिति को लेकर चिंता बनी हुई हैं। अर्थव्यवस्था में मांग की स्थिति पर नजर रखने की जरूरत है। वित्त मंत्रालय की ओर से सितंबर महीने की जारी एक समीक्षा रिपोर्ट में यह बात कही गई है। वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग ने जारी मासिक आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट के सितंबर संस्करण में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य अच्छा है। इसका कारण रुपये समेत बाह्य मोर्चे पर स्थिरता, सकारात्मक कृषि परिदृश्य, त्योहारों की मांग में सुधार और सरकारी खर्च में वृद्धि की संभावना है। रिपोर्ट के मुताबिक कुल मिलाकर उम्मीद है कि इससे निवेश गतिविधियों में तेजी आएगी। हालांकि, रिपोर्ट में कहा गया है कि अर्थव्यवस्था में मांग की स्थिति पर नजर रखने की जरूरत है। मंत्रालय के इस आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट के मुताबिक उपभोक्ता धारणा में नरमी, सामान्य से अधिक बारिश के कारण सीमित ग्राहक संख्या और विभिन्न मौसमी अवधियों में लोगों के नई खरीदारी से बचने को देखते हुए ऐसा जान पड़ता है कि शहरी मांग में नरमी है।सितंबर की मासिक आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट के मुताबिक महंगाई दर दो महीने की नरमी के बाद सितंबर महीने में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित खुदरा मुद्रास्फीति दर बढ़ी है। इसकी वजह अनियमित मानसून के चलते मुख्य

रूप से कुछ सब्जियों की आपूर्ति पर असर पड़ना था। रिपोर्ट के अनुसार कुछ सब्जियों की कीमतों में तेज वृद्धि को छोड़ दिया जाए तो महंगाई काफी हद तक काबू में नजर आ रही है। रिपोर्ट के अनुसार देश में प्रत्यक्ष रूप से और पोर्टफोलियो निवेशकों के बीच भारत के प्रति धारणा सकारात्मक है। इन भावनाओं को वास्तविक प्रत्यक्ष और पोर्टफोलियो निवेश में बदलने के लिए आर्थिक वृद्धि की गति को बनाए रखना जरूरी है। हालांकि, विदेशी निवेशक सितंबर माह में शेयरों से 85,790 करोड़ रुपये (करीब 10.2 अरब डॉलर) की भारी निकासी की है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने अक्टूबर में सर्वाधिक निकासी की गई। इससे पहले मार्च, 2020 में एफपीआई ने 61,973 करोड़ रुपये शेयर बाजार से निकाले थे। इसकी वजह चीन में प्रोत्साहन उपाय, आकर्षक शेयर मूल्यांकन और घरेलू शेयर बाजार में शेयरों का मूल्यांकन अधिक होना है।वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक बाह्य क्षेत्र लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। यह बढ़ते पूंजी प्रवाह, स्थिर रुपये और संतोषजनक विदेशी मुद्रा भंडार से पता चलता है। इस साल सितंबर में विदेशी मुद्रा भंडार 700 अरब डॉलर का आंकड़ा पार कर गया था। इसके साथ ही भारत सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा भंडार वाले टॉप चार देशों में शामिल हो गया। इस रिपोर्ट में नौकरी बाजार के संबंध में कहा गया है कि विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियों में वृद्धि जारी है। यह वित्त वर्ष 2022-23 के लिए उद्योगों के वार्षिक सर्वेक्षण से भी पता चलता है। वहीं, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के तहत नए लोगों के जुड़ने, क्रय प्रबंधकों के रोजगार उप-सूचकांक और नौकरी जॉब स्पीक इंडेक्स संगठित क्षेत्र में रोजगार सृजन का संकेत देते हैं। हालांकि, कुछ रिपोर्ट में कृत्रिम मेधा (एआई) से कर्मचारियों के नौकरी जाने की बात आई है। ऐसे में इस पर नजर रखने की जरूरत है।

निम्रत कौर

के साथ काम कर चुके हैं सुरभि ज्योति के पति, 5 साल पहले हुई थी पहली मुलाकात

सुरभि ज्योति ने अपने बॉयफ्रेंड सुमित सूरी से शादी की है. इन दोनों की मुलाकात 6 साल पहले एक म्यूजिक वीडियो की शूटिंग के दौरान हुई थी. तब से वे दोनों रिलेशनशिप में हैं. सुरभि ने कभी भी अपना रिश्ता छिपाने की कोशिश नहीं की. अक्सर अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर वो सुमित के साथ फोटो और वीडियो शेयर करते हुए नजर आती थीं. बहुत कम लोग जानते हैं कि सुरभि के पति सुमित एक एक्टर होने के साथ-साथ सफल प्रोड्यूसर भी हैं.अपने प्रोडक्शन हाउस 'द गुड हैंड्स' के तहत सुमित सूरी एडफिल्म्स, डिजिटल फिल्म्स, ब्रांड वीडियो और कॉर्पोरेट वीडियो प्रोड्यूस करते हैं. सुमित ने 11 साल पहले एरोस सिनेमा की फिल्म 'वार्निंग' से अपने करियर की शुरुआत की थी. अपने करियर फ्रेम में सुमित ने अब तक 6 फिल्में की हैं, आखिरी बार उन्हें विक्रांत मैसी और कृति खरबंदा की फिल्म '14 फेरे' में देखा गया था. अल्ट बालाजी की वेब सीरीज 'द टेस्ट केस' में सुमित निम्रत कौर के साथ नजर आए थे. ये वही निम्रत कौर हैं जिनकी अभिषेक बच्चन के साथ अफेयर की अफवाहें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं. निम्रत की 'द टेस्ट केस' में सुमित ने कैप्टन रंजीत सुजरेवाल का किरदार निभाया था.

सोशल मीडिया से दूर रहना पसंद करते हैं सुमित

सुमिल सूरी भले ही अपनी एक्टिंग से ऑनलाइन ऑडियंस का खूब मनोरंजन करते हों, लेकिन निजी जिंदगी में वो सोशल मीडिया से दूर रहना पसंद करते हैं और यही वजह है कि इंस्टाग्राम, फेसबुक और ट्विटर पर उनका कोई अकाउंट नहीं है. दरअसल सुरभि और सुमित 2024 के मार्च महीने में ही शादी करने वाले थे. सूत्रों की मानें तो दोनों ने राजस्थान के सवाई माधोपुर में शादी करने का फैसला लिया था, लेकिन फिर वेन्यू से जुड़ी दिक्कत की वजह से उन्हें अपनी शादी पोस्टपोन करनी पड़ी. फिर दोनों ने हिमाचल के जिम कॉर्बेट में शादी करने का फैसला लिया.

करण सिंह ग्रोवर के साथ सुरभि ने किया था डेब्यू

सुरभि ज्योति की बात करें तो पंजाबी इंडस्ट्री से अपने करियर की शुरुआत करने वाली सुरभि ज्योति ने करण सिंह ग्रोवर के टीवी सीरियल 'कुबूल है' से हिंदी इंडस्ट्री में अपना डेब्यू किया था. इश्कबाज, नागिन, कोई लौट के आया है जैसे कई टीवी शोज में वो अपना कमाल दिखा चुकी हैं.

अजय देवगन-कार्तिक आर्यन तो कुछ नहीं, दिवाली के असली डॉन तो अमिताभ बच्चन हैं

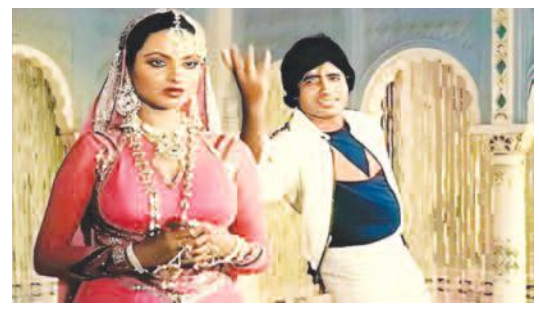

इस साल दिवाली पर अजय देवगन की 'सिंघम अगेन' और कार्तिक आर्यन की 'भूल भुलैया 3' रिलीज होने वाली है, इन दोनों फिल्मों के क्लैश को लेकर दर्शक काफी एक्साइटेड हैं. हालांकि, जहां लोग इन दोनों फिल्मों की कमाई के बारे में सोच रहे हैं, वहीं एक वक्त था जब दिवाली के मौके पर केवल अमिताभ बच्चन का ही राज चलता था. उन्होंने कई सारी बेहतरीन फिल्में दी हैं, इसके साथ ही साथ उनकी फिल्मों ने जमकर कमाई भी की है.अमिताभ बच्चन की फिल्म 'मुकद्दर का सिकंदर' दिवाली के मौके पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी. इस फिल्म में रेखा, विनोद खन्ना और राखी जैसे स्टार्स भी शामिल थे. इस फिल्म को प्रकाश मेहरा ने डायरेक्ट किया था, इस फिल्म के गाने भी काफी फेमस हुए थे. 'सलाम-ए-इश्क मेरी जान' भी इसी फिल्म का गाना है. यह फिल्म साल 1978 में रिलीज हुई थी, मुकद्दर का सिकंदर उस साल की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म थी. इतनी ही नहीं 'शोले' और 'बॉबी' जैसी शानदार फिल्मों के बाद ये तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म थी.

46 साल पहले आई 'मुकद्दर का सिकंदर'

'मुकद्दर का सिकंदर' 1.3 करोड़ रुपए की बजट पर बनी थी, जिसने 9 करोड़ रुपए की कमाई की थी. फिल्म में वर्ल्ड वाइड 22 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया था. इस फिल्म ने कई सारे फिल्मफेयर अवॉर्ड भी जीते हैं. इस फिल्म ने 7 साल तक अपना रिकॉर्ड कायम रखा, हालांकि अमिताभ ने इतने सालों के बाद खुद ही अपना रिकॉर्ड तोड़ दिया. साल 1985 में 'मर्द' फिल्म आई जो कि 'मुकद्दर का सिकंदर' के बाद दिवाली पर सबसे ज्यादा लाभ कमाने वाली फिल्म बनी.

7 साल बाद 'मर्द' ने तोड़ दिया रिकॉर्ड

'मर्द' फिल्म के बजट की बात करें तो, ये फिल्म केवल 1 करोड़ रुपए में बनाई गई थी, जिसने बॉक्स ऑफिस पर 8 करोड़ रुपए की कमाई की थी. मर्द का रिकॉर्ड 17 साल के बाद शाहरुख खान ने तोड़ दिया.

क्या गुपचुप शुरू होने जा रही है आलिया भट्ट की फिल्म? रणबीर कपूर और विकी कौशल कहां चले?

रणबीर कपूर और विकी कौशल दूसरी बार एक साथ किसी फिल्म में दिखने वाले हैं. इस फिल्म का नाम है 'लव एंड वॉर'. इससे पहले दोनों 'संजू' में साथ दिखे थे. 'लव एंड वॉर' में आलिया भट्ट भी हैं. इसे संजय लीला भंसाली बना रहे हैं.हाल ही में रणबीर और विकी को एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया. दोनों मुंबई से बाहर जा रहे हैं. ऐसा कहा जा रहा है कि वो दोनों 'लव एंड वॉर' फिल्म की शूटिंग के लिए गए हैं.

क्या शुरू होने जा रही है 'लव एंड वॉर' की शूटिंग ?

दरअसल पिंकविला ने वीडियो डाला है. इसमें विकी कौशल मूछ वाले लुक में दिख रहे हैं. रणबीर अपने डेनिम लुक में हैं. लोग अंदाजा लगा रहे हैं, ये दोनों 'लव एंड वॉर' की शूटिंग के लिए जा रहे हैं. पर ये कहां जा रहे हैं, इसका किसी को अनुमान नहीं है. संभव है दोनों का एक साथ अलग-अलग जाना एक इत्तफाक हो. इसका फिल्म से कोई लेना-देना न हो. हालांकि कुछ दिन पहले खबर आई भी थी कि भंसाली फिल्म को अक्टूबर में शुरू करना चाहते हैं. लेकिन बीते दिनों कहा गया था कि फिल्म की शूटिंग पोस्टपोन कर दी गई है.

क्या पोस्टपोन हो गई है फिल्म की शूटिंग ?

बॉलीवुड हंगामा ने कुछ दिन पहले एक खबर छापी थी. इसमें बताया गया था कि 'लव एंड वॉर' की शूटिंग अब नवंबर के एंड में या फिर दिसंबर में होगी. इसका कारण फिल्म के सेट को बताया गया. ऐसा कहा गया था कि मुंबई में बारिश के चलते फिल्म का सेट डैमेज हो गया था. इसे दोबारा बनाया जा रहा है. इसके बनने तक फिल्म की शूटिंग टाल दी गई है. ऐसा कहा जा रहा है कि फिल्म 7 नवंबर को फ्लोर पर आ सकती है.

हो सकता है कि भंसाली ने सोचा हो, जब तक मुंबई वाला सेट रेडी नहीं होता, फिल्म की शूटिंग दूसरी लोकेशन्स पर कर लेते हैं. लेकिन अभी इस बात का भी अंदाजा नहीं कि फिल्म के लिए कोई दूसरी लोकेशन चुनी भी गई है या नहीं. क्या 'लव एंड वॉर' को पूरी तरह से मुंबई में शूट किया जाएगा या कहीं बाहर भी. इसलिए फिलहाल पुख्ता तौर पर कुछ कह पाना संभव नहीं है. रणबीर और विकी शूट के लिए गए हैं या नहीं, ये कह पाना बहुत मुश्किल है.बहरहाल, 'लव एंड वॉर' एक लव ट्रायंगल फिल्म है. इसकी रिलीज डेट 20 मार्च 2026 बताई जा रही है.

'जल्दी से एक नन्ही परी ले आओ'

सोनाक्षी सिन्हा

की फोटो देख फैंस कर रहे ऐसी बातें

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा ने साल 2024 में शादी करने का फैसला लिया. उनका ये फैसला कई वजहों से चर्चा में रहा था. इसकी दो वजहें थीं. पहली वजह ये थी कि उनके घरवाले इस रिश्ते से ज्यादा खुश नजर नहीं आ रहे थे और एक्ट्रेस ने अपने परिवार के खिलाफ जाकर ये फैसला लिया. वहीं कुछ लोग इस वजह से भी शॉक्ड हुए थे क्योंकि एक्ट्रेस ने अपने अबतक के करियर में पीक पर रहकर ये फैसला लिया. फिलहाल सोनाक्षी सिन्हा अपने इस फैसले से बहुत खुश हैं और हसबेंड जहीर इकबाल संग अपनी पर्सनल लाइफ एंजॉय कर रही हैं. हाल ही में एक्ट्रेस की कुछ तस्वीरें वायरल हो रही हैं जिसमें उन्हें देखकर लोग उनकी प्रेग्नेंसी के कयास लगा रहे हैं.

वायरल हो रही हैं सोनाक्षी सिन्हा की फोटोज

सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल ने इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें शेयर की हैं. ये तस्वीरें दिवाली सेलिब्रेशन की नजर आ रही हैं. फोटोज के साथ उन्होंने कैप्शन में लिखा- Guess the pookie. इस फोटो में उनके साथ पेट डॉग भी नजर आ रहा है. जहां एक तरफ कुछ लोग फोटोज पर तारीफ कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ कुछ लोगों का ध्यान सोनाक्षी सिन्हा की ओर गया है और वे उनके प्रेग्नेंट होने का कयास लगा रहे हैं. कुछ लोग तो सोनाक्षी को अभी से बधाई भी देते नजर आ रहे हैं. वैसे सोनाक्षी सिन्हा की बात करें तो एक्ट्रेस की ओर से इस बारे में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है. सिर्फ फोटोज देखकर ही लोग कयास लगा रहे हैं.

सोनाक्षी सिन्हा को लोगों ने दी बधाई

सोशल मीडिया पर लोग सोनाक्षी को बधाई दे रहे हैं और उनके स्वस्थ्य होने की कामना कर रहे हैं. एक शख्स ने कैप्शन में लिखा- प्रेग्नेंसी पर आपको बधाई. एक दूसरे शख्स ने लिखा- नन्हें बच्चे को जल्दी पाने की आपको बधाई. एक अन्य शख्स ने लिखा- आने वाले बच्चे की आपको बधाई. एक दूसरे शख्स ने सोनाक्षी सिन्हा की पोस्ट पर रिएक्ट करते हुए लिखा- सोना तो प्रेग्नेंट लग रही है. एक अन्य शख्स ने लिखा- गार्जियस कपल के साथ एक क्यूट पप्पी. एक शख्स ने लिखा- नजर ना लगे दोनों को.